भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 10 | उदयपुर बुधवार 01 जून 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उदयपुर में हुए शिविर में चिन्तन, चितवन और नव संकल्प की उम्मीदें

- डॉ. तुक्तक भानावत -

झीलों के शहर में कांग्रेस की राजनीति के सागर मंथन की पहली पिक्चर राहुल गांधी के चेतक एक्सप्रेस में सवार होने की आई तो कहा गया कि 'इलेक्शन की इंजन की सीटी में मन डोले' की मन: स्थित में पटरी से उतरी कांग्रेस की गाड़ी फिर छुक-छुक कर विरोधियों का दिल धडक़ाने लगी है। जगह-जगह स्वागत में उमड़े कार्यकर्ताओं से अच्छा परसेप्शन मैनेजमेंट हुआ। यह भी संयोग था कि दो बोगियां बुक करवाई गईं और दो ही राज्यों में कांग्रेस की अपने बूते चलने वाली राज्य सरकारें बची हैं। कांग्रेस पर यह आरोप अब आम हो गया है कि अधिकतर नेता राज्यसभा के रास्ते सुख भोग रहे हैं, जमीन पर उनकी मौजूदगी कहीं नहीं है। वे अपने बूते दूसरों को तो क्या, खुद को भी चुनाव नहीं जिता सकते। परिवार की कोटरी की भक्ति में लीन लोग भी कह रहे हैं कि वक्त हाथ से निकल रहा है। कांग्रेस अपने फिलहाल की जर्जर होती हालत से कैसे अचानक उठ खड़ी होगी और नई चुनौती पेश कर राजनीति को नई दिशा देगी, यह आने वाला वक्त ही बताएगा।

भावुक अपीलों के साथ मैराथन माथापच्ची, बहस-मुबाहिसों में चेहरों पर जमी मुखौटे वाली धुंध को झाड़ कर साफ करने की कोशिशें, बागियों की अनुशासित सिपाहियों सरीखी चुप्पी, पदयात्रा से पूरे देश की राजनीतिक जमीन को अपने लिए उर्वरा बनाने का संकल्प, बुढ़ाती पीढियों के खांटी नेताओं को गुलदस्ते में सजा 50 तक की उम्र के तेजतर्रार युवा नेताओं को ड्राइविंग सीट की कमान, एक परिवार से एक टिकट का सशर्त ऐलान, ब्लॉक से लेकर आलाकमान स्तर तक संगठन में आमूलचूल परिवर्तन की मशाल और अंतरआत्मा की आवाज को सुनते हुए मैराथन लड़ाई के लिए तैयार रहने की अपीलें।

सोनिया गांधी | राहुल गांधी | प्रियंका गांधी | अशोक गहलोत

ये कुछ 'टेम्प्लेट्स' हैं झीलों की नगरी उदयपुर में 13-15 मई तक हुए कांग्रेस पार्टी के 'नव संकल्प चिंतन शिविर' के। राज्य के चुनाव से एक साल और देश के चुनाव से महज दो साल दूर रहे 'राजनीतिक घमासान' में अपनी हिम्मतें, हसरतें, हकीकतें, हिमाकतें, हौसले और हिदायतों की ताकत को तौलने जुटे देश भर से आए पार्टी के 430 नेताओं और प्रतिनिधियों ने उदयपुर के ताज अरावली रिसोर्ट में हर मौजूं विषय पर समालोचनात्मक चिंतन किया और यह संदेश देने की कोशिश की कि जबर्दस्त ध्रुवीकरण की राजनीति के मौजूदा दौर में केवल कांग्रेस ही ऐसी पार्टी है जो 'पेन इंडिया' उपस्थिति का माद्दा रखती है फिर चाहे मजबूत सरकार देने की बात हो या फिर मजबूत विपक्ष की भूमिका।

राज्यों में जनाधार के सिकुड़ने के बीच ढ़ह रहे किलों व अपनों की भितरघात की चुभती कीलों के बावजूद फिर से उठ खड़े होने की ख्वाहिशें अब बिना देर किए जमीन पर उतारने की हरचंद कोशिश होगी। चिंतन शिविर से पहले कई सवाल थे। नया क्या होने वाला है? अध्यक्ष पद का सेहरा अब किसके सिर बंधने वाला है? कौनसा नया मंत्र पार्टी की धमनियों में रक्त की गति को प्रबल करेगा? कौन बोलेगा? कितना बोलेगा? मन की बातों को कितना सुना व कहा जाएगा? किसको मिजाजपूर्ति का मौका मिलेगा तो कौन किसका कोपभाजन बनेगा?

झीलों के शहर में कांग्रेस की राजनीति के सागर मंथन की पहली पिक्चर राहुल गांधी के चेतक एक्सप्रेस में सवार होने की आई तो कहा गया कि 'इलेक्शन की इंजन की सीटी में मन डोले' की मन:स्थित में पटरी से उतरी कांग्रेस की गाड़ी फिर छुक-छुक कर विरोधियों का दिल धडक़ाने लगी है। जगह-जगह स्वागत में उमड़े कार्यकर्ताओं से अच्छा परसेप्शन मैनेजमेंट हुआ। यह भी संयोग था कि दो बोगियां बुक करवाई गईं और दो ही राज्यों में कांग्रेस की अपने बूते चलने वाली राज्य सरकारें बची हैं।

इधर, उदयपुर पहुंचते ही कई तस्वीरों ने सूरते हाल बयां किए। मसलन प्रियंका का 'चार्टर उडऩ खटोले' से आना, राहुल के अगल-बगल की सीट पर गहलोत का दिखना, पायलट का दृश्य से गुम हो जाना। स्वागत के पोस्टरों से रातोंरात पायलट के फोटो का अंतर्ध्यान हो जाना। 'चिंतन की महा-कवरेज' के लिए दिल्ली से सडक़ मार्ग से चौपहिया में बुलाए पत्रकारों को भरी गर्मी में दिन भर गेट के बाहर ही रोके रखना आदि-आदि-आदि दृश्य उपस्थित हुए और इस बहाने सोशल मीडिया की 'एल्गोरिदम' में उदयपुर शहर का नाम 'टॉप' पर चमक गया। चिंतन के दूसरे दिन मीडिया को सीएम अशोक गहलोत व अन्य बड़े नेताओं के साथ चाय-पानी का 'हीलिंग-टच' नसीब हुआ तो प्रेसवार्ताओं के माध्यम से 'अंदर की बातों' की मनचाही खबर-पेशगी दी गई।

बहरहाल, दूसरे दिन आर्थिक नीतियों, किसानों, सामाजिक समरसता सहित विभिन्न मुद्दों पर बात हुई। साथ ही तय हुआ कि पार्टी अब किसी भी नेता को दो बार से अधिक बार राज्यसभा नहीं भेजेगी क्योंकि कांग्रेस पर यह आरोप अब आम हो गया है कि अधिकतर नेता राज्यसभा के रास्ते सुख भोग रहे हैं, जमीन पर उनकी मौजूदगी कहीं नहीं है। वे अपने बूते दूसरों को तो क्या, खुद को भी चुनाव नहीं जिता सकते। प्रेसवार्ताओं में देश में स्वामीनाथन फार्मूले को लागू करने, न्यूनतम समर्थन मूल्य, सबसिडी, किसान का कर्जा माफ, बिजली बिल आधा हो आदि मसलों पर चर्चा की गई। देश की आर्थिक नीति को फिर से रि-सेट करने की जरूरत, अजा-जजा, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यकों की आर्थिक स्थिति में सुधार पर चर्चा हुई।

- शेष पृष्ठ सात पर

उदयपुर चिंतन शिविर या चिंता-शिविर?

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

उदयपुर में 13 से 15 मई तीन दिन का कांग्रेस का चिंतन-शिविर आयोजित किया गया। सबसे आश्चर्य तो मुझे यह जानकर हुआ कि इस जमावड़े का नाम चिंतन-शिविर रखा गया। हमारे नेता और चिंतन! इन दो शब्दों की यह जोड़ी तो बिल्कुल बेमेल है। भला, नेताओं का चिंतन से क्या लेना-देना? छोटी-मोटी प्रांतीय पार्टियों की बात जाने दें, देश की अखिल भारतीय पार्टियों के नेताओं में चिंतनशील नेता कितने हैं? क्या उन्होंने गांधी, नेहरु, जयप्रकाश, लोहिया, नरेंद्रदेव की तरह कभी कोई ग्रंथ लिखा है? अरे लिखना तो दूर, वे बताएंगे कि ऐसे चिंतनशील ग्रंथों को उन्होंने पढ़ा तक नहीं है।

अशोक गहलोत, भूपेश बघेल और कमलनाथ ने अपने-अपने प्रांत में अच्छा काम कर दिखाया है लेकिन क्या कांग्रेसी इनमें से किसी को भी अपना अध्यक्ष बना सकते हैं ? यदि कांग्रेस पार्टी में राष्ट्रीय और प्रांतीय अध्यक्षों और पदाधिकारियों का चुनाव गुप्त मतदान से हो तो इस महान पार्टी को खत्म होने से बचाया जा सकता है। कांग्रेस के नेता अगर चिंतनशील होते तो देश में शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार को लेकर कोई क्रांतिकारी योजना पेश करते और करोड़ों लोगों को अपने साथ जोड़ लेते लेकिन हमारी सभी पार्टियां चिंतनहीन हो चुकी हैं।

अरे भाई, वे इन किताबों में माथा फोड़ें या अपनी राजनीति करें? उन्हें नोट और वोट उधेड़ने से फुरसत मिले तो वे चिंतन करें। यह चिंतन शिविर नहीं, चिंता-शिविर आयोजित रहा। उन्हें चिंता है कि उनके नोट और वोट खिसकते जा रहे हैं। इस चिंता को खत्म करना ही इस शिविर का लक्ष्य रहा। ऐसा नहीं है कि यह चिंतन-शिविर पहली बार हुआ। इसके पहले भी चिंतन-शिविर हो चुके हैं। उनकी चिंता भी यही रही कि नोट और वोट का झांझ कैसे बजता रहे?

किसी भी राजनीतिक दल की ताकत बनती है, दो तत्वों से! उसके पास नीति और नेतृत्व होना चाहिए। कांग्रेस के पास इन दोनों का अभाव है। नेतृत्व का महत्व हर देश की राजनीति में बहुत ज्यादा होता है। भारत-जैसे देश में तो इसका महत्व सबसे ज्यादा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा मूर्तिपूजक देश है। मूर्ति चाहे बेजान पत्थर की ही हो लेकिन भक्तों को सम्मोहित करने के लिए वह काफी होती है। आज कांग्रेस में ऐसी कोई मूर्ति नहीं है। अशोक गहलोत, भूपेश बघेल और कमलनाथ ने अपने-अपने प्रांत में अच्छा काम कर दिखाया है लेकिन क्या कांग्रेसी इनमें से किसी को भी अपना अध्यक्ष बना सकते हैं ?

कांग्रेस की देखादेखी हमारी सभी पार्टियां प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां बन गई हैं। उक्त सुयोग्य नेताओं की हैसियत भी सिर्फ मैनेजरों से ज्यादा नहीं है। यदि कांग्रेस पार्टी में राष्ट्रीय और प्रांतीय अध्यक्षों और पदाधिकारियों का चुनाव गुप्त मतदान से हो तो इस महान पार्टी को खत्म होने से बचाया जा सकता है लेकिन सिर्फ कोई नया नेता क्या-क्या कर लेगा? जबतक उसके पास कोई नई वैकल्पिक नीति, कोई सामयिक विचारधारा और कोई प्रभावी रणनीति नहीं होगी तो वह भी मरे सांप को ही पीटता रहेगा। वह सिर्फसरकार पर छींटाकशी करता रहेगा, जिस पर कोई ध्यान नहीं देगा। आजकल कांग्रेस, जो मां-बेटा पार्टी बनी हुई है, वह यही कर रही है। कांग्रेस के नेता अगर चिंतनशील होते तो देश में शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार को लेकर कोई क्रांतिकारी योजना पेश करते और करोड़ों लोगों को अपने साथ जोड़ लेते लेकिन हमारी सभी पार्टियां चिंतनहीन हो चुकी हैं। चुनाव जीतने के लिए वे भाड़े के रणनीतिकारों की शरण में चली जाती हैं। सत्तारूढ़ होने पर उनके नेता अपने नौकरशाहों की नौकरी करते रहते हैं। उनके इशारों पर नाचते हैं और सत्तामुक्त होने पर उन्हें बस एक ही चिंता सताती रहती है कि उन्हें येनकेनप्रकारेण कैसे भी फिर से सत्ता मिल जाए।

आर्थिक विषमता से कॉरपोरेट क्षेत्र में पनपते दो भारत

- प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत -

भारतीय कॉरपोरेट क्षेत्र में आर्थिक विषमता की स्थिति भयावह होती जा रही है। अर्थव्यवस्था पर कुछ बड़ी कंपनियों का दबदबा बढ़ता जा रहा है जबकि मध्यम और छोटी कंपनिया मुख्य धारा से बाहर होती जा रही हैं। कोविड-19 के बाद तो यह स्थिति और गंभीर हो गई है।

अब कॉर्पोरेट सेक्टर में भी दो भारत देखने को मिल रहे हैं। एक समृद्ध कॉरपोरेट भारत दूसरा गरीब कॉरपोरेट भारत। कॉर्पोरेट सेक्टर में कुछ कंपनियां अथाह लाभ कमा रही हैं। दूसरी तरफ छोटी, मझली एवं सूक्ष्म कंपनियां अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह निष्कर्ष बिजनेस स्टैंडर्ड द्वारा प्रकाशित रेवेन्यू आधारित टॉप 1000 कंपनियों के 2021 के वित्तीय परिणामों के विश्लेषण करने पर सामने आया।

वर्ष 2021 में देश की सर्वोच्च 1000 कंपनियों ने कुल 4 लाख 47हजार 328 करोड रुपए का शुद्ध लाभ कमाया। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि टॉप 213 (21.3 प्रतिशत) कंपनियों का इस लाभ में 90 प्रतिशत हिस्सा है जबकि शेष 786 (78.6 प्रतिशत) कंपनियों का हिस्सा मात्र 10 प्रतिशत हैं। 183 कंपनियों ने हानि दर्ज की। मात्र 6 कंपनियां ऐसी हैं जिन्होंने 15000 करोड रुपए से ज्यादा वार्षिक लाभ कमाया है। ये तथ्य स्पष्ट रूप से इंगित कर रहे हैं कि संपदा का केंद्रीयकरण कुछ बड़ी कंपनियों के हाथों में हो रहा है । इससे बड़ी एवं छोटी कंपनियों में आर्थिक विषमता का बीज पनपता जा रहा है।

बड़ी कंपनियां संगठित क्षेत्र में आती हैं जबकि छोटी कंपनियां असंगठित क्षेत्र में जिसका भारतीय अर्थव्यस्थ में लगभग 90 प्रतिशत हिस्सेदारी है। ऐसा क्यों हो रहा है? संभवत कोविड-19 के दरमियान असंगठित एवं छोटे उद्योगों की मांग संगठित क्षेत्र में खिसक गई। इन बड़ी कंपनियों का मार्केट शेयर निरंतर बढ़ता गया। छोटी कंपनियों की तुलना में बड़ी कंपनियों ने ज्यादा लाभ कमाया। इसके कई कारण रहे हैं। बड़ी कंपनियों ने अपनी इनपुट लागत को घटाया।

सरकार ने सितंबर 2019 में कॉरपोरेट टैक्स रेट को 30 प्रतिशत से घटाकर 22 प्रतिशत इस सोच के साथ की थी कि प्राइवेट सेक्टर अपनी अतरिक्त आय को अर्थव्यस्था में विनोयग कर रोजगार सृजन करेंगे, किंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ।

इन कंपनियों ने टैक्स से बचे लाभों का लाभांश बांटने एवम अपने ही अंशों के बायबैक के लिए उपयोग किया। परिणामस्वरूप बचे लाभों का हिस्सा अमीरों के पास ही चला गया जिससे धन का केंद्रीकरण कुछ कारपोरेट घरानों में होता गया।

इस तरह सरकार की आर्थिक नीतियो ने न चाहते हुए भी कॉरपोरेट सेक्टर में दो भारत की कल्पना साकार कर दिया। हमें छोटी कंपनियों पर भी ध्यान देना होगा। देश में केवल कुछ कंपनियों की संपदा बढ़ाने से काम नहीं चलेगा। इससे जीडीपी में तो विस्तार मिलेगा किंतु छोटी कंपनियों के हालात बिगड़ते जाएंगे और समाज में रोजगार के पर्याप्त अवसर भी पैदा नहीं होंगे। यह जिम्मेदारी सरकार की है कि सभी कंपनियों को आगे बढ़ाने के लिए समान अवसर प्रदान करें। इसके लिए सरकार को निम्न कदम उठाने चाहिए।

(1) बड़ी एवं छोटी कंपनियों के लिए अलग-अलग आय कर की दर होनी चाहिए।

(2) छोटी कंपनियों का सरकारी बकाया राशि का भुगतान जल्दी होना चाहिए। इस बकाया राशि में कर वापसी, सरकारी मंत्रालयों को बेचे गए सामान की राशि आदि सम्मिलित है। ये कंपनियां सरकार के चक्कर लगाती रहती हैं। उनका भुगतान समय पर नहीं होता परिणामस्वरूप तरलता की कमी से व्यवसाय का परिचालन प्रभावित होता है।

(3) भारत में विभिन्न कानूनों के अंतर्गत कम्पनियों को 69233 यूनीक कंप्लायंस करने पड़ते हैं जिसमें 26134 दशाओं में कंप्लायंस न होने पर जेल की सजा है। छोटी कंपनियों को भी 500 से 900 कम्प्लाइअन्स करने पड़ते हैं जिसकी वार्षिक लागत 12 से 18 लाख आती है। सरकार को इन कंप्लायंस को कम से कम करना चाहिए।

प्रतापगढ़ की विश्व प्रसिद्ध थेवा कला

- पन्नालाल मेघवाल -

सत्रहवीं शताब्दी में थेवा कला का उद्गम प्रतापगढ़ (राजस्थान) के शासक

सामंतसिंह के शासनकाल में हुआ। इस कला के प्रथम शिल्पी नाथूलाल सोनी थे। उनकी कलाकृतियां देख उन्होंने थेवा कला को प्रश्रय दिया और उन्हें राजसोनी परिवार की उपाधि प्रदान की। अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में क्रमश: रघुनाथसिंह एवं रामसिंह के शासनकाल में राजसोनी परिवारों को सर्वाधिक संरक्षण मिला और चार सौ बीघा जमीन बक्शीश में दी। फलस्वरूप इस कला की कृतियां विश्व के प्रमुख संग्रहालयों तथा राजमहलों में सुशोभित हो रही हैं। राजा महाराजाओं ने भी अपने मेहमानों को थेवा-कला की उत्कृष्ट कलात्मक वस्तुएँ उपहार में देने में कोई कसर नहीं रखी।

थेवा कला काँच पर सोने का सूक्ष्म चित्रांकन है। काँच पर सोने की यह कारीगरी अत्यन्त बारीक, कमनीय एवं कलात्मक होती है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम ग्लास (काँच) का प्रयोग किया जाता है। चित्रकारी का ज्ञान इसके लिए आवश्यक होता है। सर्वप्रथम सोने की बारीक शीट पर सूक्ष्म चित्रांकन नई नक्काशी के साथ किया जाता है। यह महान तपस्या एकनिष्ठ अभ्यास से ही प्राप्त हो पाती है। अलग रंगों के काँच पर सोने की चित्रकारी इस कला का मौलिक आकर्षण है।

थेवा कला में लगभग चार इंच लम्बी एवं तीन इंच चौडी स्वर्ण शीट को पीट-पीट कर मनचाहा विस्तार दिया जाता है। शीट को पीटते रहने की प्रक्रिया को 'थेरना' कहा जाता है। शीट पर विभिन्न आकृति उकेरने के लिए उपयोगी चाँदी के रिंग की फ्रेम को 'वादा' कहते हैं। इस प्रकार थेरना के 'थे' एवं वादा के 'वा' से 'थेवा' शब्द बना।

इसमें एक छोटी सी अगूंठी से लेकर बड़ी मजूंषा तक बनाई जाती है। इनमें गले का हार, पेण्डल, इयरिंग, पाजेब, बिछुए, सिगरेट, बाक्स, इत्रदान, पानदान, टाईपिन, कफ के बटन, कलात्मक तश्तरियाँ, श्रृंगारदान एवं तस्वीरें जैसी अनेक चीजें

बनाई जाती हैं। भाव मग्न मोर की आकृतियाँ, रासलीला एवं शिकार के दृश्य, फूल पत्ती आदि का कलात्मक चित्रांकन इस कला की उत्कृष्टता प्रतिपादित करती है।

इन अंलकृत आभूषणों का मूल्य धातु न होकर कलाकार की कला-कारीगरी का है। इसमें सोना कम एवं साधना अधिक होती है। ये उपकरण मंहगे होने बावजूद व्यापक खपत लिये हैं। इसकी लोकप्रियता के कारण ही देश-विदेश के ग्राहकों के अग्रिम आदेश रहते हैं। ग्राहकों की माँग एवं रूचि के अनुसार भी चीजें बनाई बनाई जाती हैं।

भारत सरकार ने भी थेवा कला की मनभावन कलाकृतियों की कलात्मकता से प्रभावित हो राजसोनी परिवार के सदस्यों को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया है। सन् 1969 में रामप्रसाद सोनी, सन् 1970 में शंकरलाल राजसोनी, सन् 1972 में वेणीराम राजसोनी, सन् 1975 में रामविलास राजसोनी, सन् 1977 में जगदीशप्रसाद राजसोनी, सन् 1980 में बसन्तराज राजसोनी एवं सन् 1982 में रामनिवास राजसोनी और फिर कैलाशचन्द्र राजसोनी, महेशकुमार राजसोनी, लक्ष्मीनारायण राजसोनी एवं निर्मलकुमार राजसोनी को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार ने भी इन कलाकारों को समय-समय पर सम्मानित किया है।

आश्चर्य की बात है कि विश्व प्रसिद्ध यह कला केवल प्रतापगढ़ के एक राजसोनी परिवार तक ही सीमित है। इसकी निर्मिति इतनी गोपनीय रखी जाती है कि परिवार के पुत्रों को ही यह कला सिखाई जाती है। महिलाएं चाहे वे बहिन-बेटियां हो अथवा बहुएं; उन्हें इससे वंचित ही रखा जाता है। इसलिए यह कहावत भी प्रचलित है कि जाई और आई दोनों ही इसकी कारीगरी से अनजान रखी जाती हैं।

अपनी कहानियों में जिंदा है आलमशाह खान : आफरीदी

उदयपुर (ह. सं.)। साहित्यकार फारूक आफ़रीदी ने कहा कि डॉ. आलमशाह खान मेवाड़ की धरती पर जन्मे ऐसे अनमोल रतन हैं जो कहानी के कारण आजतक जिंदा हैं। जैसे चंद्रधर गुलेरी की उसने कहा था, प्रेमचंद

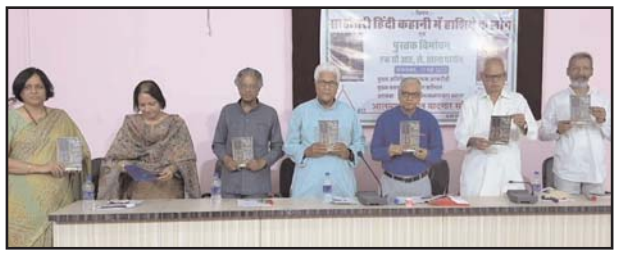

की गबन, सेवा-सदन, रंगभूमि, गोदान, कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर के लिए याद किया जाता है उसी तरह डॉ. आलमशाह को परायी प्यास का सफर, किराए की कोख, एक और सीता जैसी कहानियों के लिए याद किया जाता रहेगा। आफरीदी प्रो. आलमशाह की 19वीं पुण्यतिथि पर 17 मई को 'साठोत्तरी हिंदी कहानी में हाशिये के लोग' विषय पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

मुख्य वक्ता कृष्ण कल्पित ने कहा कि साहित्य का दायरा बहुत लंबा होता है। यह सीमित कालावधि में नहीं लिखा जा सकता। इसके लिए लंबी तपस्या करनी होती है। आलमशाह खान को अपनी रचनाशीलता की वजह से लोकप्रियता प्राप्त थी। इस दौरान उन्होंने उपेक्षित लेखकों की परंपरा, साहित्यिक परंपरा और सिनेमा नाटक के जरिये साहित्य को दुनिया के समक्ष लाने के तथ्यों को उद्घाटित किया।

अध्यक्षता करते हुए सत्यनारायण व्यास ने कहा कि मेवाड़ का नाम विश्व में प्रसिद्ध है। यह वीरता, स्वाभिमान और गौरव की भूमि है। यह सब आलमशाह की कहानियों में भी परिलक्षित होता है। कार्यक्रम में आलमशाह की पुत्री डॉ. तराना परवीन के कहानी संग्रह 'एक सौ आठ' का विमोचन किया गया। डॉ. सरवत खान ने पुस्तक के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी की। संचालन उग्रसेन राव ने किया।

तनवीरसिंह आप पार्टी में शामिल हुए

उदयपुर (ह.सं.)। दिल्ली और पंजाब के बाद अब आम आदमी पार्टी राजस्थान में भी सियासी पैर जमाती दिखाई दे रही है। बीस साल से भाजपा में सक्रिय भूमिका निभाने वाले नेता तनवीरसिंह कृष्णावत ने भाजपा छोड़कर आम आदमी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली है। कृष्णावत को 14 मई को जयपुर में आप पार्टी के प्रदेश प्रभारी विनय मिश्रा ने सदस्यता दिलाई। आप पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने पर कार्यकर्ताओं ने कृष्णावत का गर्मजोशी से स्वागत किया। आप पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता मयंक त्यागी ने बताया कि कृष्णावत पार्टी में जल्द ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

स्मृतियों के शिखर (144) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पत्रकारिता की पयस्विनी में मेरी जीवनधर्मिता (1)

पत्रकार बनने का मैंने कभी कोई स्वप्न नहीं देखा लेकिन ऐसा कई बार होता है कि हम जो कुछ बनना चाहते हैं, वह नहीं बन पाते हैं और जो नहीं बनना चाहते हैं वह सेंतमेंत में ही बन जाते हैं। ऐसे ही मैं दैनिक हिन्दुस्तान का उदयपुर क्षेत्र का संवाददाता बन गया। हुआ यह कि मैं उन दिनों देश की लगभग सभी नामचीन हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लग गया था। तब बिना किसी आहट और पूर्व सूचना दिये दैनिक हिन्दुस्तान ने मुझे अपना संवाददाता बना दिया।

उनकी मुझे 3 जनवरी 1977 को एक चिट्ठी मिली जिसमें अक्टूबर 1976 से मुझे संवाददाता बना लिया गया लिखा। इस सूचना के साथ ही तीन महीने के पारिश्रमिक का चैक भी संलग्न था। मुझे वह पत्र आश्चर्य में डाल गया और मैंने मन-ही-मन यह समझ लिया कि वे मुझे इस योग्य समझते हैं अत: मुझे उनकी समझ का पूरी ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए।

मैं तब से लेकर सन् 1999 तक इस पत्र में इधर के समाचार और विशेष रपटें भेजता रहा जो बड़ी सुर्खियों में रहीं और मेरे द्वारा भेजे गए सर्वाधिक समाचार बॉक्स में भी छपे। बहुत बाद में जब शरदेन्दुजी हिन्दुस्तान के संपादक के रूप में उदयपुर में मुझे मिले तो उनसे पूछने पर मालूम हुआ कि उदयपुर में उन्हें किसी को संवाददाता बनाना था तो उन्होंने निर्णय लिया कि वहां के डॉ. भानावत को हम बरसों से इसमें छाप रहे हैं अत: उन्हीं को बना दिया जाए।

दैनिक हिन्दुस्तान में मैंने प्रतिदिन घटने वाले समाचार बहुत कम भेजे। वे ही समाचार मुख्य रूप से भेजे जो या तो सामान्य समाचारों से हटकर कुछ विशिष्ट थे या फिर शहर की समस्याओं से जुड़े समाचार भेजे।

समाचार भेजते समय भी मेरा ध्यान इस बात पर रहता कि मैं वह समाचार भेजूं जो प्राय: कहीं नहीं छपता हो और जिसके माध्यम से एक विशिष्ट संस्कृति का झलकाव देखने को मिलता हो साथ ही जनजीवन में व्याप्त विशिष्ट परंपरा और आस्थामूलक कलाधर्मिता का जुड़ाव भी देखने को मिले।

इस दृष्टि से मैंने एक समाचार अपने ही ससुराल की उस घटना का भेजा जहां 100 वर्ष से होली पर शोक मनाया जाता रहा। कारण कि तब उस दिन परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो गई थी। मान्यता के अनुसार यह शोक तभी टूटता है जब उसी दिन उस परिवार में किसी बालक अथवा गाय-भैंस के बछड़ा-बछड़ी होता हो। यह समाचार 10 मार्च 1987 को छपा जो इस प्रकार था-

बछड़े के जन्म से सौ वर्ष का शोक टूटा

उदयपुर (ह.सं.)। होली के दिन एक गाय ने बछड़े को जन्म देकर लगभग सौ वर्ष पुरानी ओक तोड़ी। कानोड़ नामक कस्बे में भाणावत गोत्र वाले ओक के कारण न होली मना पा रहे थे न किसी प्रकार का कोई राग रंग ही कर पा रहे थे। उनके परिवार में किसी बड़ेरे की होली के दिन मृत्यु हो जाने से शोक चला आ रहा था कि अचानक प्रतापसिंह भाणावत की गाय ने इस बार होली के दिन एक बछड़े को जन्म दिया जिससे यह शोक टूट गया लिहाजा सभी ने मिलकर बड़े आनंद-उत्साह से होली मनाई।

बछड़ा होते ही सारे गांव में ढोल बजवाकर यह मंगल सूचना दिलाई गई। इससे सारे सगे-संबंधियों तथा गांववालों को इसका पता लग गया। सायंकाल महिलाओं को एकत्र कर मंगल गीत गवाये गये।

बताशे और स्टेनलेस स्टील की कटोरियां बांटी गई। प्रतापसिंह ने बताया कि गाय 'तेजी' की यह पांचवीं संतान है जिसका नाम उनके बच्चों ने मिलकर 'अमिताभ' रख दिया है। प्रतापसिंह ने बाहर के अपने समधियों को भी कटोरियां भेजकर यह शुभ सूचना भिजवाई। उल्लेखनीय है कि इसी भाणावत परिवार में धूलंडी को भी ओक थी जो तीस वर्ष पूर्व इसी प्रकार टूटी। कानोड़ में भाणावतों के लगभग पंद्रह परिवार हैं।

उदयपुर की विनोबा संदेश नामक समाजसेवी संस्था ने पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के कारण सम्मान के लिए मेरा चयन किया। इसके संस्थापक मनोहरलाल सरूपरिया ऐसे कार्य सबसे हटकर अनूठे तरीके से करते हैं। जब समारोह हुआ तो सारे कार्यक्रम अबोले यानी मौन हुए। सरूपरियाजी ने समारोह स्थल पर एक ब्लेक बोर्ड रखवा दिया था। उस पर चॉक द्वारा लिखकर सारे कार्यक्रम संपादित किए गए। मैंने इसकी खबर भेजी जो हिन्दुस्तान में 20 अप्रेल 1990 को प्रकाशित हुई।

अनूठा मौन सम्मान समारोह

उदयपुर (निसं)। हर व्यक्ति व संस्था के अपने कार्य करने के अलग-अलग तौर-तरीके होते हैं। इनमें से कुछ कार्य ऐसे अनूठे होते हैं जो चर्चा का विषय बन जाते हैं। समाजसेवी संस्था विनोबा संदेश द्वारा यहां आयोजित एक अनूठे मौन समारोह में देश के प्रख्यात पत्रकार एवं लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत का सम्मान किया गया। इस समारोह में किसी प्रकार की चर्चा, भाषण व आवाज लगाने आदि पर पूर्णतया प्रतिबन्ध था। इस संक्षिप्त समारोह में मुख्य अतिथि प्रसिद्ध व्यंग्यकार व पत्रकार ओम शर्मा ने डॉ. भानावत को शॉल ओढ़ाकर सम्मान स्वरूप दो हजार रू. नगद व श्रीफल भेंट किया।

समारोह के प्रारंभ में विनोबा संदेश के संस्थापक मनोहरलाल सरूपरिया ने मुख्य अतिथि, सम्मानित पत्रकार तथा निर्णायकों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण के रूप में वितरित पर्चे में तथा जीवन पद्धति में उन आदतों का शुमार करना लिखा जिनसे एक दूसरे के प्रति भाईचारा बढ़े। इसके लिए संस्था किसी भी जरूरतमंद की आर्थिक सहायता के बजाय स्वावलम्बन के लिए प्रेरित करती है तथा समाज में व्याप्त विषमताओं एवं अनियमितताओं को दूर करने के लिए प्रयासरत रहती है।

भ्रष्टाचार, झूठफरेब एवं मुनाफाखोरी के विरूद्ध हमारी लड़ाई जारी है चाहे यह गलत कार्य करने वाला कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो। सरूपरिया ने लिखा कि संस्था ने भटके हुए युवाओं को समाज में पुनर्प्रतिष्ठित करने एवं उन्हें अपनी बुराइयों से निजात दिलाने का ठोस प्रयास किया है।

इस अवसर पर नगर की विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विनोबाजी के चित्र पर पुष्पाहार अर्पित किए। समारोह का पूरा कार्यक्रम एक बोर्ड पर लिख दिया गया था। इस बोर्ड के रिक्त स्थान पर मुख्य अतिथि शर्मा ने अपनी लिखित अभिव्यक्ति इन शब्दों में की- 'यह कार्यक्रम अत्यन्त मौलिक, गरिमापूर्ण तथा आल्हादकारी रहा, आयोजक साधुवाद के पात्र हैं। हार्दिक शुभकामनाएं एवं धन्यवाद।'

सम्मान उपरान्त डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपनी अभिव्यक्ति बोर्ड पर इस प्रकार लिख दी-

मौन मधुर ममता समता का यह अद्‌भुत आनन्द।
अजब गजब में खोया यारों, मुखरित हूं हरचन्द।।

उदयपुर पत्रकार परिषद के महामंत्री सुभाष गादिया ने भी सभी पत्रकारों की ओर से इस आयोजन के प्रति आभार व्यक्त किया। सम्मान के लिए पत्रकार का चयन करने वाले निर्णायक थे - सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी जितेन्द्र माथुर, आकाशवाणी संवाददाता एम.पी. शकुनि तथा पत्रकार परिषद् राजस्थान के महामंत्री विष्णु शर्मा 'हितैषी'।

अकाल के दिनों में उदयपुर की विश्व प्रसिद्ध पीछोला झील भी क्रिकेट का मैदान बन गई थी। ऐसी स्थिति में इस जिले और संभाग की स्थिति का सहज अंदाज लगाया जा सकता है। यों मेवाड़ का यह प्रदेश सदैव से ही सूखे से जूझता रहा है। मैंने सब तरफ भ्रमण कर इस अकाल पर लोकसंगत रपट भेजी। ऐसी मेरी अन्य कई और रपटें भी हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुईं। यहां पुराने अकाल की याद दिलाते हुए 9 नवम्बर 1987 को भेजी रपट का जायजा लीजिए-

नगरा खूटौ सारो रे, नदियां टूटा नीरा रे

उदयपुर (ह.सं.)। अकाल हो चाहे महाकाल, कितनी ही परेशानी हो परंतु ग्रामीणजन अपना रंजन कभी नहीं छोड़ेंगे बल्कि गाने नाचने में उसकी पीड़ा-व्यथा प्रकट कर हल्के ही होंगे। इस प्रकार का साहित्य तात्कालिक परिस्थिति का जीवंत चित्रण करता है और सामाजिक परिस्थितियों का ऐतिहासिक दस्तावेज बनता है।

इधर अकाल तो पड़ता ही रहता है पर दो अकाल अभी भी याद किए जा रहे हैं। पहला संवत् 1896का तथा दूसरा संवत् 1956का। उदयपुर के गांवांचलों में आज भी इन अकालों की गूंज गहराती सुनने को मिलती है। ऐसे समय में ये गीत फिर से अधिक गाए जा रहे हैं जबकि इधर भारी अकाल पड़ा हुआ है। कड़ावा है-

छनवा थारे माथे बीजुरी जो पड़जो
बाजरा री बारे रोटी ने गंवां रोटी तेरा
जेठजी जो जीमण बेठा लूट्या तम्बू डेरा

हे छनवा! तुम्हारे ऊपर बीजली पड़े। बाजरे की बारह और गेहूं की तेरह रोटी बनाई। जेठजी जीमने बैठे तो तंबू डेरे भी लूट ले गए। यहां छनवा से तात्पर्य संवत् 1896 के अकाल से है। छप्पन्या यानी संवत् 1956 के अकाल का वर्णन तो कई रूपों में सुनने को मिलता है। एक गीत इस प्रकार है-

पड़ती सानो सपना रे दुखिया राजा
नगर खूटौ सारो रे, नदियां टूटा नीरा रे।
खांणा टूटा नीरा रे, लखमी मरने लागी रे।।
धान खूटा कोठरा रे, खाई ने सूटी मकी रे।
दनिया उठवा लागी रे।।

हे राजा! छप्पन के साल घोर अकाल पड़ा। सारा नगर उजड़ गया है। नदी का पानी सूख गया है। महुड़ा का खाना भी खत्म हो गया है। मवेशी मरने लगे हैं। कोठों में भरा धान खत्म हो गया है। मक्की भी खाते-खाते खत्म हो गई है। आदमी मरने लग गए हैं। ये गीत इस अकाल में भी चल रहे हैं पर साथ-ही-साथ वर्तमान स्थिति की भी जानकारी दे रहे हैं-

अंदर जमीं रूठी ने जंगल रूठिया
मंगर्‌यां भाटा तपिया पंखी उजड़्या
पाणी बिन वाणी बंधगी वाछरू
ढांढा चोपायां जीणो छोड़ियो
हेंडापंपां में पाणी सूखियो
कालो जो काल अकाल रो।

इन्द्रराजा, धरती और जंगल सब रूठ गए हैं। मगरों के पत्थर तप रहे हैं। पक्षी उजड़ गए हैं। पानी के बिना बछड़ों का बिंबियाना तक बंद हो गया है। हैंडपंपों का पानी भी सूख गया है। अकाल का काल काला हुआ जा रहा है। 26 मई 1988 को प्रकाशित समाचार में मैंने लिखा-

इन्दर रूठा, जग झूठा

उदयपुर (ह. सं.)। अकाल की निरंतर मार खाते-खाते कई आदिवासी घरों के छप्पर टूट गए हैं। घर आंगन हो गए हैं। उनके बच्चों ने न कपड़े पहनने का सुख देखा, न सब्जी का स्वाद लिया। न गेहूं खाया और न हरियाली ही देखी। पानी में भी कभी डुबकी नहीं खाई न कोई हंसी-खुशी का त्यौहार मनाया।

घर उजड़े, पशु उजड़े और अब आदमी भी उजड़ रहे हैं। घर का चूल्हा भी मात्र दो पत्थरों के सहारे पड़ा है जो कभी-कभी ही कुछ पकाता है। अनाज के दाने पकाकर उन्हीं का रस कभी पी लिया जाता है तो कभी कोई पत्ते डाली भून का खा लिए जाते हैं। कई-कई दिन भूखे रहने का स्वाद रह गया है।

बीमारियां इन्हें कई लग गई हैं। इतनी गंदगी किसी पीढ़ी ने नहीं झेली। सरकारी अस्पताल में अव्वल तो दवाई नहीं है, है भी तो डॉक्टर पैसा चाटता है तब ही इलाज करता है। इसलिए इनका अपना ही इलाज चलता है। शरीर के विभिन्न हिस्सों को दागते हैं। डाम लगवाते हैं। झाड़-फूंक करते हैं। टोटके तंतर-मंतर करते हैं। ढोल थाली बजाकर बीमारी उतारते हैं। लोग अपनी किस्मत को रो रहे हैं और इस संसार को तो झूठा ही कह रहे हैं जहां कोई किसी का नहीं रहा।

गर्मी के दिनों में जब स्कूल बंद रहते हैं और बच्चों को अवकाश रहता है तब उनके मनोरंजन के लिए कई तरह के मनोविनोदपरक खेल दिखानेवाले आते हैं। इन्हीं में एक लकड़ी का बना गोल पहिये वाला ठेला होता है जिसके चारों ओर सुराख होते हैं। बच्चे इसमें अपनी आंखें गड़ाये भीतर सिनेमा की तरह चलता रील देखते हैं। यह समाचार था-

बच्चों में कौतुहल बनी बारह मन की धोबन

उदयपुर (ह.स.)। इन दिनों यहां की गली-गली में लकड़ी का गोल संदूकनुमा ठेला बच्चों में खासा कौतुहल बना हुआ है। इस ठेले के नीचे पहिए लगे हुए हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 जून 2022

सम्पादकीय

अनाम रचनाओं का भेल-मेल

हमारे यहां प्रसिद्ध रचनाकारों के लेखन के साथ अनाम रहकर अपनी रचना मिलाकर श्रुत अथवा लिखित साहित्य की परिपाटी किंवा परम्परा को गतिमान बनाये रखने का सिलसिला रहा है जो आज भी यथावत है। खासकर काव्य-सृजन की दिशा में यह खूबी देखने को मिलती है। जो रचनाकार अधिक प्रचलन में आ गये, उनके साथ लोकमानस ने बड़ा भेल-मेल किया है। इससे कईबार यह निर्णय ही नहीं हो पाया कि अमुक कवि की कौनसी रचना उनकी स्वयं की लिखी हुई है औश्र किस हद तक कौनसी उसके साथ मिला दी गई है।

उदाहरण के लिए मीरांबाई, कबीर, रहीम, बिहारी तो ऐसे रचनाकार हैं जिन्हें प्रारम्भिक कक्षा से लेकर सर्वोच्च कक्षाओं में भी पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता रहा है। इनके नाम की सैकड़ों रचनाएं ऐसी खोजी जा सकती हैं जो लोकमानस द्वारा लिखी गई हैं। इनमें पुरुषों की तुलना में महिला रचनाकारों की संख्या भी कमतर नहीं है।

राजस्थानी भाषा-साहित्य के प्रख्यात लेखक डॉ. मोतीलाल मेनारिया का यह कथन द्रष्टव्य है। वे लिखते हैं-

''प्रामाणिक सामग्री में संदिग्ध सामग्री को मिलाना कभी हितकर सिद्ध नहीं होता। इससे आगे जाकर अनेक उलझनें पैदा हो जाती हैं जैसा कि मीरांबाई के पदों के सम्बन्ध में हुआ है। मीरांबाई के पदों के अनेक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित हुए हैं किन्तु उनसे यह भी पता नहीं लगता कि उनमें कौनसे पद वास्तव में मीरांबाई के हैं और कौनसे नहीं हैं। यही हाल बिहारी-सतसई के दोहों का भी हुआ है।''

हस्तलिखित ग्रन्थागारों में अनेक ऐसी प्रतियां मिलती हैं जिनमें एक ही रचना के विभिन्न रूप, पाठान्तर मिलते हैं। ऐसे में यह निर्णय करना मुश्किल हो जाता है कि कौनसा पाठ लेखक का लिखा हुआ है। चार-चार, पांच-पांच हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जिन लोगों ने सम्पादन कार्य किया है, उन्हें बड़ी मुसीबत और उलझन का सामना करना पड़ा है।

यही हाल मौखिक रूप में प्रचलित रचनाओं का है। जिन गायकों से सुनेंगे, उनमें पाठ-भेद पाया जाता है। कारण स्पष्ट है उनकी लोकप्रियता बहुआयामी, बहुभाषी, बहुप्रान्तीय होने से भी यह स्थिति मिलती है।

यों कल्पनाशील कौन नहीं होता? वक्त आने पर हर व्यक्ति गाने लगता है, तान मिलाने लगता है। ऐसी स्थिति में वह परम्परागत रूप में जो चीज चली आ रही है उसमें अपनी मरजी का, अपनी मौज का अलग से जोड़ता हुआ अपने को अनाम रखने में ही आत्मतोषी अनुभव करता है।

विविध संस्कारों पर जो उत्सवी नेगचार होते हैं उनमें हर जाति में भेद मिलेगा। जनजातियों में अवसर देखकर तत्काल ही समूहबद्ध रचना होने का ठाठ भी निराला है। भजन मण्डलियों में भी ऐसा करिश्मा आम बात है। ऐसे अनेक आंचलिक कवि-कवयित्रियां हैं जिनकी रचनाओं का अध्ययन भी बड़ा दिलचस्प होगा।

'द मिनिएचरिस्ट ऑफ जूनागढ़' शॉर्ट फिल्म जारी

उदयपुर (ह. सं.)। रॉयल स्टैग बैरल लार्ज शॉर्ट फिल्म्स ने अपनी नई शॉर्ट फिल्म 'द मिनिएचरिस्ट ऑफ जूनागढ़' जारी की। इसमें सुप्रसिद्ध कलाकार नसीरुद्धीन शाह, रसिका दुग्गल, पद्मावती राव और राज अर्जुन प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 1947 के जूनागढ़ रियासत की पृष्ठभूमि पर बनी है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे विभाजन ने एक बूढ़े मिनिएचरिस्ट कलाकार, हुसैन नक्काश (नसीरुद्धीन शाह अभिनीत) को बाध्य कर दिया।

नसीरुद्धीन शाह ने कहा कि आम लोगों पर विभाजन के प्रभाव के बारे में और अपने पीछे इसने जो जख्म छोड़े हैं, उसके बारे में बात करना जरूरी है। हुसैन का किरदार बखूबी लिखा गया है और मैं तुरंत ही उसमें ढल गया। रसिका दुग्गल ने कहा कि इस फिल्म में बारीकियों पर जो ध्यान दिया गया है उसने मेरा ध्यान अपनी तरफ खींचा, वहीं मुझे अपने टीचर नसीरुद्धीन शाह के साथ काम करने का मौका मिला। 'चटनी' और 'द स्कूल बैग' जैसी शॉर्ट फिल्मों के बाद, रॉयल स्टैग बैरल सिलेक्ट लार्ज शॉर्ट फिल्म्स के साथ काम करने का यह मेरा तीसरा मौका है।

'द मिनिएचरिस्ट ऑफ जूनागढ़' के बारे में कौशल ओजा कहते हैं, यह फिल्म यह एक भावुक कलाकार की रोचक कहानी है जो अपने घर और वतन से बिछड़ने का जवाब उम्मीद और मिलन से देता है। यह बात आज के दौर के दर्शकों के दिलों को भी छू जाएगी। मैं लार्ज शॉर्ट फिल्म्स पर बतौर दर्शक फिल्मों का आनंद लेता था और मुझे इस बात की खुशी है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई यह फिल्म रॉयल स्टैग बैरल सिलेक्ट लार्ज शॉट फिल्म्स के माध्यम से भारत और दुनिया भर में ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुँचेगी।

वर्षा से वर्ष का भविष्य कथन

वर्षा से पूर्व विविध धर्मस्थलों पर आने वाले वर्ष की स्थिति को लेकर भविष्यवाणियों का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है।

श्रद्धालु लोगबाग इसके लिए निश्चित तिथि पर एकत्र होकर भविष्यवाणी के अनुसार फसल की स्थिति, व्यापारिक लाभ-हानि, चीजों की खरीद बिक्री, भाव-ताव के अनुरूप संग्रह करने की स्थिति की जानकारी के लिए उत्सुकतापूर्वक भावी भाखणी करने वाले देव-प्रतिनिधि भोपे तथा अन्य विधाओं की खोजखबर लेते हैं।

सुप्रसिद्ध नाथद्वारा के श्रीनाथजी मन्दिर में इस अवसर पर आषाढ़ी तोलने की परम्परा चली आ रही है। इसके अनुसार खर्च भण्डार के भण्डारी की उपस्थिति में 27 जिसों के साथ आषाढ़ी तोली जाती है। श्रृंगार दर्शन के बाद वर्ष फल सुनाया जाता है।

27 प्रकार के जिंसों में मूंग, सफेद मक्की, पीली मक्की, बाजरा, ज्वार, सफेद साल, लाल साल, चवला छोटा, चवला मोटा, सफेद तिल्ली, काली तिल्ली, उड़द, मोठ, ग्वार, कपास, जौ, काठा गेहूं, चन्द्रेसी गेहूं, चना पीला, चना लाल, सरसो पीली, सरसो लाल, गुड़, नमक, काला गारा (मिट्टी), लाल गारा (मिट्टी) एवं चारा तोले जाकर इन्हें कपड़े में बांधकर मिट्टी के बर्तन में पैक कर कोठे में जौ के ढेर में सुरक्षित रख श्रृंगार के दर्शन के पश्चात पुनः तोलकर वर्षफल का निर्णय सुनाया जाता है।

परिणामों में वर्षा के अनुमान का आधार मिट्टी के चार पिण्ड भूरा, सफेद, काला व पीला जो आषाढ़, सावन, भादवा व आसोज माह के प्रतीक हैं। इनके ऊपर जल से भरे कलश का पूजन कर जल के अवशोषण के आधार पर वर्षा का अनुमान लगाया जाता है। इसके अनुसार वर्षा सामान्य या खण्डवृष्टि, धान्य उत्पादन उत्तम, मध्यम या सामान्य रहने के साथ ही वायु की दिशा पूर्व-पश्चिम की पुरवाई का कथन किया जाता है।

नए माहौल से साक्षात्कार कराते मेले

- डॉ. मीनाक्षी गर्ग -

मेला नाम आते ही बच्चों के दिल दिमाग में गुड़ियों का घर, मौत का कुआ, चकडोलर, घोड़ा डोलर में झूलने का आनंद, शरीर के विभिन्न अंगों पर गूदना बनवाने की ललक, तरह-तरह के नमकीन-मिष्ठान्न का मजा लेने का मौका, रोजमर्रा की चीजों के अलावा अन्य उपयोगी वस्तुओं की खरीददारी तथा नाचते-गाते लोगों को देखने की मुराद उमड़ आती है।

बुजुर्गों का बच्चों को एक नए माहौल से साक्षात्कार कराने का सपना साकार होता दिखाई देता है। मेला शब्द परिचायक है विभिन्न संस्कृतियों के मिलन का, आधुनिकता की दौड़ में भाग रहे इंसानों को एक सुकून भरा वातावरण प्रदान करने का। प्राचीन समय से चली आ रही मेला परम्परा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। मेला बच्चे, बूढ़े, जवान, युवतियां ,औरतें आदि सभी को अपनी और आकर्षित करता है।

बड़े उत्साह से लोग अपने परिवार जन के साथ मेले में शिरकत करते हैं। मेला लगते ही बच्चों की फरमाइश परवान चढ़ने लगती है। महिलाएं घर तथा अपना श्रृंगार सामान खरीदने में लगी रहती हैं। कवियों की नवरंग कविताएं, गजलें, शेरो शायरी, नगमे सुनने की दबी हुई ख्वाहिशों को पूरा होता देख नवयुवकों का मन प्रफुल्लित हो जाता है। जिंदगी की भागमभाग के दौर में कला कौशल दिखाते कलाकार, जोकर का हंसी ठठ्ठा, मौत का कुआं, युवकों का मस्करी करना, सर्कस में जानवरों के करतब, आदि मेले की लोकप्रियता को बरकरार बनाए हुए हैं।

जीवन के रोमांचकारी पलो से परिचय कराते मेले अपने परिसर में बेहद महत्वपूर्ण और मेहनतकश इंसानों को समेटे हुए हैं। दूरदराज के गांवों, शहरों से आए दुकानदार मेले में अपनी-अपनी दुकानें लगाते हैं और उन्हें लाइटों की जगमग रोशनी में नहला देते हैं। सजावट का दुकानदारों द्वारा रखा जाने वाला विशेष ध्यान ही मेले में चार चांद लगा देता है । मेला एक ऐसा स्थान है जहां अमीर गरीब का कोई भेद नहीं होता है सब अलग-अलग रास्तों से आते हैं और मेले में आकर एक हो जाते हैं। बच्चे खुशी से झूम उठते हैं और उनके माता-पिता तथा परिवार जन उन्हें खुश देखकर आत्मीय आनंद की अनुभूति का एहसास करते हैं।

प्रतिस्पर्धा के युग में आगे निकल जाने की होड़ में आज मनुष्य मनोरंजन का अर्थ भूल गया है। होटल, रेस्टोरेंट ओर कैफे संस्कृति ने आज अमीर और गरीब के अंतर को बढ़ा दिया है। ऐसी जगहों पर निम्नवर्गीय व्यक्तियों का पहुंचना और उस जगह आनंद लेने का सपना दूभर हो गया है लेकिन मेले में इस तरह का कोई भेद अमीर और गरीब के बीच दिखाई नहीं पड़ता सभी चाट पकौड़ी, गोलगप्पे पॉपकॉर्न आदि ठेलो के चारों ओर खड़े होकर भाईचारे के साथ सबरंग स्वाद का अनुभव करते हैं।

दीक्षांत समारोह में 48 को पी.एचडी. तथा 80 टॉपर्स को गोल्ड मेडल

उदयपुर (ह. सं.)। शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि द्वारा आयोजित 14वें दीक्षांत समारोह में 48 को पी.एचडी. तथा 80 टॉपर्स को गोल्ड मेडल प्रदान किये। डॉ. कल्ला ने युवा पीढी से आह्वान किया कि वे शिक्षा के माध्यम से देश की एकता को बनाए रखने, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार करने, अच्छे नागरिक बनने और बनाने के प्रयास बनाए रखें ।

प्रारंभ में कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस सारंगदेवोत ने विवि की गतिविधियों तथा उपलब्धियों की जानकारी दी और बताया कि विवि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शैक्षिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन और पाठ्यक्रमों को शामिल करने का कार्य शुरू कर चुका है जिसमें शोध पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस बार भी 80 गोल्ड मैडल में से 42 गोल्ड मैडल महिलाओं तथा पीएचडी की उपाधियों में भी महिलाओं ने बाजी मारी। समारोह में वरिष्ठ पत्रकार फर्स्ट इंडिया न्यूज के प्रबंध निदेशक जगदीशचन्द्र को डी-लिट् की मानद उपाधि से नवाजा गया।

मद्रास उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति एपी साही ने कहा कि भारतीय शिक्षा जीवन के दर्शन को सिखाने के साथ-साथ स्वयं को अनुशासित करने और समाज के लिए कर्तव्य पालन को पूर्ण करने के लिए प्रेरित करती है। स्वामीनारायण मंदिर लोया के संत डॉ. वल्लभदास स्वामी ने दीक्षार्थियों से आत्मसम्मान को बनाने और स्वयं को सर्वशक्तिमान मानते हुए मूल्यों के साथ जीवन पथ पर अग्रसित होने की बात कही। कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय जानी ने कहा कि विवि नए-नए पाठ्यक्रम व कोर्सेज उपलबध करवा रहा है। उन्होंने संज्ञानात्मक विज्ञान, मानवाधिकार, कमर्शियल एंड साइबर लॉ से जुड़े पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की घोषणा की।

20 'मारवाड़ रत्न' के बीच एक 'मेवाड़ रत्न' सम्मानित

यह अप्रत्याशित संयोग ही रहा कि जोधपुर में 12 मई को अपने वैभवशाली अतीत की शाही स्मरणांजलि में मनाये जाने वाले 564वें स्थापना दिवस समारोह में मैं भी शरीक हुआ। इसीदिन वर्तमान महाराज गजसिंह मारवाड़ का 70वां पाटोत्सव और लगैटगै पिछले 20 वर्षों से मनाये जा रहे जगठाणे सम्मान समारोह का शानदार आयोजन भी था।

इस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय असाधारण उपलब्धिधारक 20 महानुभावों का भावभीना, जोधपुर के राजवंशों की मान-मर्यादा और ओपती ठसक से लकदक जो सम्मान प्रदान किया गया वह सम्मानितों के लिए शिलालेखीय स्मृतिकारक ही बन गया।

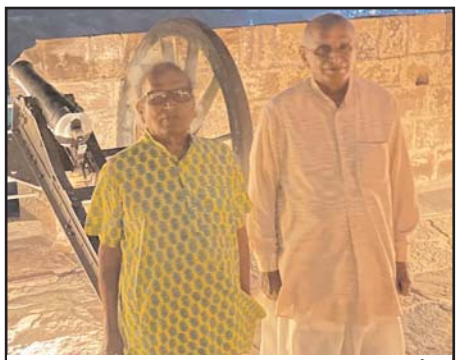
डॉ. भानावत के साथ प्रो. भंवरसिंह सामौर

समारोह में मेरे पूर्व परिचित राजस्थानी-हिन्दी के मूर्धन्य लेखक चुरू के प्रो. भंवरसिंह सामौर का ही मुझे सर्वाधिक सान्निध्य मिला। मेहरानगढ़ के मानशाही परकोटे के भव्य समारोह स्थल के पास ही हम लोग ठहराये गये। ठहराने तथा खान-पान की सबरंग सुखी व्यवस्था से हम उल्लसित थे। ऐसी बेहतरीन सरवरा के लिए डॉ. महेन्द्रसिंह तंवर को धन्यवाद मात्र औपचारिकता होगी। मेरे साथ आत्मज डॉ. तुक्तक थे जबकि प्रो. सामौर के साथ उनके सुपुत्र मानसिंह और सुपुत्री गीता थीं जो जयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी की व्याख्याता हैं।

प्रो. सामौर ने बड़ी भावुक स्थिति में फक्र के साथ बताया कि वे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के शिष्य रहे। भाभी डॉ. शान्ता भानावत एम. ए. में उनके साथ सहपाठी थीं। अफसोस करते हुए यह भी कहा कि वे दोनों और मां भी मात्र 6 माह में काल कवलित हो गये। गीताजी ने बताया कि भानावतजी के सुपुत्र डॉ. संजीव भानावत से वे भलीप्रकार परिचित हैं। उन्हीं के प्रयत्नों से विश्वविद्यालय में पत्रकारिता का अलग से विभाग खुला और वे अपनी सेवानिवृत्ति तक उसकी सफलतापूर्वक पहचान बनाये रहे।

समारोह में प्रो. भंवरसिंहजी और मैं एक दिन पहले संध्या को पहुंच गये थे कारण कि दूसरे दिन साढ़ा आठ बजे प्रात: ही हमें समारोह स्थल पर अपनी उपस्थिति देनी थी। भंवरसिंहजी को डॉ. नारायणसिंह भाटी सम्मान से नवाजा गया जबकि मुझे पद्मश्री कोमल कोठारी तथा डॉ. सद्दीक मोहम्मद को पद्मश्री सीताराम लालस नामित सम्मान प्रदान किया गया। मैं उन तीनों स्मृतिशेष विद्वानों से भलीभांति परिचित रहा।

डॉ. नारायणसिंहजी यहां की ख्यात संस्था राजस्थानी शोध संस्थान के निदेशक थे और 'परम्परा' नामक त्रैमासिक शोधपत्रिका का सम्पादन करते थे। उन्होंने 1966 में जब उसका राजस्थानी लोकसाहित्य अंक भाग 21-22 प्रकाशित किया तो पहला लेख मेरा ही राजस्थान के लोकनाट्य प्रकाशित किया। सीतारामजी से पहलीबार उदयपुर में जब वे राजस्थान साहित्य अकादमी की एक बैठक में भाग लेने आये थे, तब भेंट हुई। उनके साथ अगरचन्दजी नाहटा, डॉ. मनोहरजी शर्मा तथा चन्द्रदानजी चारण थे।

इस भेंट में सीतारामजी का सान्निध्य मेरे लिए अब भी यादगार बना हुआ है। मैंने उनके द्वारा तैयार किये जा रहे राजस्थानी सबद कोश को राजस्थानी भाषा-साहित्य का अकल्पनीय कोश बताया और विनम्रतापूर्वक यह भी कहा कि क्या आप इसे डिंगल कोश के अधिक नजदीक नहीं मानते? इस पर उन्होंने स्मित मुस्कान लिए मेरे कंधे पर हाथ रख कहा, आप सच कह रहे हैं। मैं डिंगल का ही जानकार हूं। लोकसाहित्य के आप लोग हैं, मैं नहीं, इसलिए यह काम आप जैसे लोगों को करना है।

कोमलजी से तो मेरा सर्वाधिक सम्पर्क रहा। जब वे संगीत नाटक अकादमी में सचिव थे तब और बाद में भी कई बार विभिन्न शहरों में लोकानुरंजन समारोहों में हमारी भेंट होती रही। जैसलमेर-बाड़मेर में तो हमने साथ-साथ लंगों-मांगणियारों के लोकसंगीत का कोई चालीस घण्टों का रेकार्डिंग भी किया।

समारोह में पाबूजी की पड़ के वाचक भोपे तपाराम भील को भी सम्मानित किया गया। मैं इनसे भी मिला। ये पड़ वाचक की पोशाक लाल कोर-किनारीदार लम्बा झग्गा-धोती पहने थे। अब तक पाबूजी महाराज के पड़ चितराम के सहारे विविध गांवों-कस्बों-शहरों में ये हजार से अधिक प्रदर्शन दे चुके हैं। मैंने उन्हें कहा, सबसे पहले मैंने ही पाबूजी-देवनारायण की पड़ बनाने वाले जोशी चितेरों और बांचने वाले भोपों तथा बंचवाने वाले भक्तों पर लिखा। 'पाबूजी की पड़' नाम से वर्षों पूर्व मेरी एक पुस्तक भी भोपाल के आदिवासी लोककला परिषद से प्रकाशित हुई।

डॉ. भानावत के साथ तपाराम भील

अन्य विद्वानों में बीकानेर के प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ. महेन्द्रसिंह खड़गावत भी सम्मानित हुए। जब मैंने 1955 से 58 तक वहां बी.ए. तक की पढ़ाई की तब इस संस्थान में उनके पिता नाथूसिंहजी खड़गावत थे जिनसे मैंने एकबार भेंट की थी।

डॉ. हुकमसिंह भाटी के साथ डॉ. भानावत

विदा होते समय प्रो. सामौर ने मुझे अपनी लिखी 'आऊवा का धरना', भारतीय साहित्य के निर्माता सिरीज के अन्तर्गत केन्द्रीय साहित्य अकादमी से प्रकाशित राजस्थानी कृति 'शंकरदान सामौर' तथा 'राजस्थानी शक्तिकाव्य' नामक पुस्तकें भेंट कीं जो अपने विषय की खासा सामग्री लिए बड़ी उपयोगी हैं।

मैंने भी उन्हें अपनी 'निर्भय मीरां' और 'लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़' भेंट की।

मारवाड़ की लूओं वाली गर्मी की भयंकर तपन को देखते उदयपुर का मौसम सुहावना ही कहा जा सकता है। करीब 3 बजे हमने वहां से प्रस्थान करते बीच रास्ते में चौपासनी स्थित राजस्थानी शोध संस्थान के निदेशक रहे डॉ. हुकमसिंहजी भाटी से नहीं मिलना वादाखिलाफी करना था। इस संस्थान में हमारा पहलीबार ही जाना हुआ। वहां उनके सुपुत्र डॉ. विक्रमसिंह भाटी ने बड़ी आत्मीयता से भेंट की। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों का परिचय कराते बताया कि संस्थान का ग्रन्थालय अपनेआप में अनुपम है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, भक्ति, जैन, ज्योतिष, दर्शन, आयुर्वेद आदि अनेक विषयों की अमूल्य कृतियों के साथ ही ठिकानों की बहियां, पट्टों, परवानों के अलावा विभिन्न रजवाड़ों के शासकों, योद्धाओं, युगपुरुषों, सन्तों, भक्तों, प्रेम-प्रसंगों तथा सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़े 300 अलभ्य चित्रों का अलभ्य संग्रह है।

इसके पश्चात पास ही के निवास पर हमें डॉ. हुकमसिंहजी से भेंट कराई। डॉ. हुकमसिंहजी पूर्व में जब उदयपुर के भूपाल नोबल्स संस्थान के प्रताप शोध प्रतिष्ठान में निदेशक पद पर कार्यरत थे तब कई बार वहां आयोजित समारोहों, संगोष्ठियों में तो मिलना हुआ ही पर वे गाहेबगाहे चेटक सर्कल स्थित मेरे कार्यालय में भी आ जाया करते थे। वे शोध पत्रिका 'मज्झमिका' का सम्पादन करते थे। मुझे याद है उसका एकाध अंक मैंने भी अपने मंगल मुद्रण में छापा था।

वर्षों बाद डॉ. भाटीजी से हमारी भेंट जो ओवरफ्लो उत्साह और उल्लास दे गई, वह शब्दों में नहीं आंकी-बांधी जा सकती। इसके चलते उन्होंने एक शॉल ओढ़ाकर मुझे घनिष्ट गाढ़ी मैत्री का एहसास कराया।

डॉ. भाटी ने बताया कि अब तक बावजी महाराज गजसिंहजी द्वारा मारवाड़ के लोगों को ही 'मारवाड़ रत्न' सम्मान से विभूषित किया जाता था। इसबार सम्मान समिति ने क्षेत्र-विस्तार नापा है। इसका समर्थन सम्मान समिति के जानेमाने साहित्यकार प्रो. जहूर खां मेहर और मैंने भी किया और हम सबने मिलकर आपका नाम प्रस्तावित किया जिससे सबको लगा कि बावजी ने बीस रत्नों का जड़ाव किया जिसमें पहलीबार मारवाड़ रत्न में मेवाड़ रत्न के आने से हमारी वर्षों की मिलने की साध भी पूरी हुई।

वहां से विदा लेते समय डॉ. भाटी ने मुझे 'राजस्थानी शोध संस्थान का स्वर्णिम इतिहास' पुस्तक भेंट की जिसमें संस्थान की 50 वर्षीय कार्य प्रगति का सांगोपांग वर्णन-विश्लेषण है।

इस यात्रा का उल्लेखनीय पक्ष यह भी रहा कि जाते समय हमने नई विकसित होती 'ओम बन्ना' देवता की धाम के दर्शन भी कर लिये। यह धाम पाली-जोधपुर हाईवे के किनारे स्थित है। वर्षों पूर्व जब मैं इधर से गुजरा तब ओम

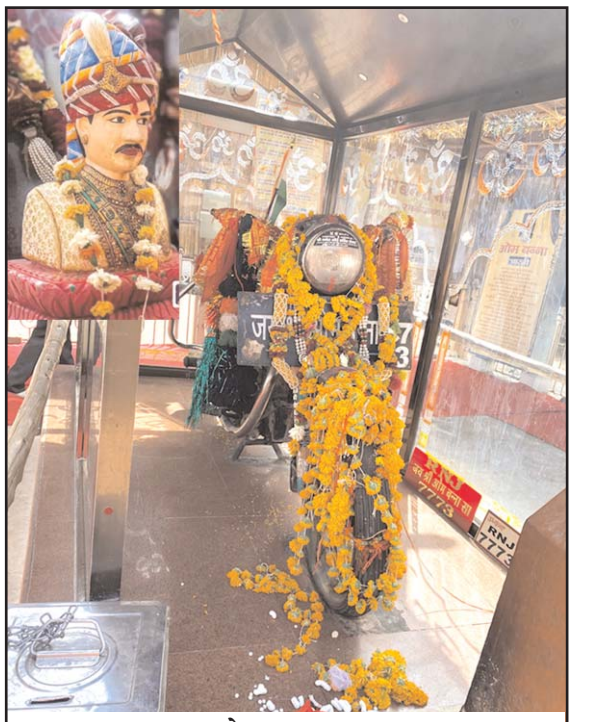
ओम बन्ना धाम

बन्ना की प्रतीक केवल एक मोटरसाइकिल खड़ी थी जिसके लिए प्रसिद्धि रही कि ओम बन्ना के परिवार वाले इस मोटरसाइकिल को अनेकों बार अपने घर ले गये किन्तु वहां से पता नहीं, कैसे यह किस रूप में पुन: यहां आकर ही स्थिर हो गईं।

इसबार इस स्थान को देखा तो पूरा धाम ही जातरियों की चहल-पहल लिए आबाद मिला। धाम पर कई दुकानें भी लग गईं। वह मोटरसाइकिल भी फूल-मालाओं से सजीधजी काच के पिंजरे में बंद देखी गई और पास ही एक ऊंचे चबूतरे पर अखण्ड ज्वाला की प्रसादी लेते दर्शनार्थी नमन करते देखे गये। दूर-दूर तक पहुंच देते भजनीक गानों की बहार और मनौती-प्रसादी करते भक्तों की रेलमपेल भी देखते ही बनी।

चारभुजाजी की प्रतिमा

लौटते समय चारभुजा स्थित प्रसिद्ध चारभुजानाथ के दर्शनों का आह्लाद आनन्द मंगल शकुन दे गया। वर्षों पूर्व यहां लगने वाले एक मेले में मैं सम्मिलित हुआ था। तब मेले में 'गढ़बोर बिराजे चारभजा' पंक्ति सुनी थी जो आज भी देव-दर्शन के समय याद हो आई। बड़े भीड़भाड़ वाले संकड़े रास्ते को पार कर मन्दिर तक पहुंचना पड़ता है। अधिक आवश्यकता है कि इस पूरे मन्दिर परिसर को इतना खुला कर दिया जाय कि चारों ओर से दर्शनार्थियों की पहुंच सुलभ हो सके।

- म. भा.

बाजार / समाचार

हेल्दी वॉटर आयोनाइजर और प्रीफिल्टर मशीनें लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। गंगनम स्ट्रीट रिटेल एलएलपी की एक इकाई बीथोसोल आयोनाइज्ड हेल्दी वाटर ने मध्य और पश्चिमी राजस्थान में अपनी

हेल्दी वाटर आयोनाइजर मशीनों और प्रीफिल्टर मशीनों को लॉन्च की घोषणा की। कंपनी 2021 की आखिरी तिमाही में पहले ही भारत में अपने उत्पादों को पेश कर चुकी है। गंगनम स्ट्रीट रिटेल एलएलपी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक संजीव राठी ने बीथोसोल आयोनाइज्ड हेल्दी वाटर के 5 मॉडलों के बारे में बताया जो कंपनी ने पेश किए हैं। उन्होंने उस प्रभावशाली उत्पाद रोड मैप की एक झलक भी पेश की जिनको कंपनी ने खास तौर पर भारतीय बाजार के लिए तैयार किया है।

जेके टायर की आय 31 प्रतिशत बढ़ी

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. (जेके टायर) ने वित्तीय वर्ष 2022 के लिये अपने अंकेक्षित परिणामों की घोषणा कर दी है। बोर्ड ने 75 प्रतिशत की दर से (2 रूपये अंकित मूल्य वाले शेयर पर 1.50 रूपये प्रति शेयर) लाभांश देने का प्रस्ताव रखा है। वित्त वर्ष 2022 में जेके टायर ने 12,020 करोड़ रूपये की कंसोलिडेटेड आय पर 1110 करोड़ रूपये का एबिडिटा एवं 309 करोड़ रूपये का कर पूर्व लाभ अर्जित किया है।

अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने वित्त वर्ष 2022 में अब तक का सबसे अधिक 12,000 करोड़ रुपये का राजस्व हासिल किया। कोविड प्रतिबंधों के खुलने के बाद अच्छी मांग है, जिसके परिणामस्वरूप वाणिज्यिक वाहन और यात्री कार टायर खंडों में अधिक मांग आई है। निर्यात ने शीर्ष-पंक्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया और पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत अधिक था। उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष -22 में असाधारण आवक लागत वृद्धि ने चौतरफा लागत में कमी और दक्षता में सुधार के उपायों के साथ-साथ सभी टायर श्रेणियों में समय-समय पर कीमतों में वृद्धि के बावजूद हमारे मार्जिन को प्रभावित किया है। कंपनी की सहायक कंपनियों - कैवेंडिश इंडस्ट्रीज लि. और जेके टॉर्नेल, मैक्सिको ने राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दोनों संस्थाओं ने वित्त वर्ष -22 के लिए अब तक की सबसे अधिक बिक्री हासिल की है।

नई पहल 'अनस्टॉपेबल-करके दिखाऊंगी' शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और गोस्पोर्ट्स फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से महिला एथलीटों और कोचों के लिए दो चरणों में छात्रवृत्ति कार्यक्रम 'अनस्टॉपेबल-करके दिखाऊंगी' का शुभारंभ किया। सभी सामाजिक पहलों के लिए एचडीएफसी बैंक के अम्ब्रेला ब्रांड और सीएसआर पहल परिवर्तन के तत्वावधान में यह कार्यक्रम देशभर से प्रतिभाशाली महिला एथलीटों की पहचान करेगा और खेलों में उत्कृष्टता की उनकी खोज का समर्थन करेगा। गोस्पोर्ट्स फाउंडेशन द्वारा परिकल्पित, यह पहल भारत में खेलों में महिलाओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करेगी। फाउंडेशन 3 साल के लिए विशेष भागीदार के रूप में एचडीएफसी बैंक के साथ कार्यक्रम की रूपरेखा तय करने के साथ उसको अच्छी तरह से क्यूरेट और कार्यान्वित करेगा। यह कार्यक्रम खेल विषयों-ओलंपिक, पैरालंपिक, शीतकालीन खेलों और मोटरस्पोर्ट्स में राज्य और राष्ट्रीय स्तर के योग्य एथलीटों से आवेदन आमंत्रित कर रहा है। आवेदन 24 जून, 2022 तक खुले हैं। एथलीटों की चयन प्रक्रिया में 100 दिन लगेंगे और 20 एथलीटों को छात्रवृत्ति से सम्मानित किया जाएगा।

टाटा ब्लूस्कोप स्टील ने लांच किया ड्यूराशाइन कैम्पेन

उदयपुर (ह. सं.)। टाटा ब्लूस्कोप स्टील ने 'स्टील में जीवन को रंग देने' के अपने ब्रांड के वादे को साकार करने के अपने निरंतर प्रयास में एक वीआईपी वाली फीलिंग के साथ अपनी प्रमुख रिटेल ब्रांड ड्यूराशाइन के लिए एक नया कैम्पेन शुरू किया है। टाटा ब्लूस्कोप स्टील के एमडी अनूप कुमार त्रिवेदी ने कहा कि यह पैन इंडिया स्तर पर टेलीविजन, प्रिंट, ओटीटी और डिजीटल प्लेटफॉर्म सहित सभी माध्यमों से प्रसारित किया जायेगा। इस कैम्पेन फिल्म में नायक का उद्देश्य उन लोगों के साथ ब्रांड की अपील को और मजबूत करना है जो अपनी जीवनशैली को उन्नत करने की इच्छा रखते हैं। अभियान का उद्देश्य मिलेनियल्स से जुड़ना है, एक बढ़ता ग्राहक आधार जो सामान्य से ऊपर उठकर बेहतर जीवन के लिए, उनकी प्रेरणा को दर्शाता है। बेस्ट इन क्लास रूफिंग समाधानों के साथ निर्मित घर के मालिक होने पर गर्व करता है। ड्यूराशाइन रूफिंग सॉल्यूशंस न केवल बेहतर प्रदर्शन, बेहतर एस्थेटिस्क का वादा करते हैं, बल्कि एक समझदार ग्राहक के लिए चुनने के लिए कई विकल्प भी प्रदान करते हैं। वाइस प्रेसिडेन्ट साल्यूशन्स बिजनेस सीआर कुलकर्णी ने कहा कि यह अभियान ब्रांड से जुड़ा एक आकांक्षी मूल्य बनाकर ग्राहकों को प्रसन्नता प्रदान करता है।

एलजी ने उदयपुर में सबसे बेस्ट शॉप शुरू की

उदयपुर (ह. सं.)। ग्राहकों को बेहतरीन रिटेल खरीदारी का अनुभव प्रदान करने और भारतीय कंज्यूमर ड्यूरेबल इंडस्ट्री में विश्वस्तरीय मानक स्थापित करने के लिए उदयपुर में एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स की नई बेस्ट शॉप का उद्घाटन एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के सेल्स हेड संजय चितकारा एवं एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के क्षेत्रीय व्यापार प्रमुख तरुण भारद्वाज द्वारा किया गया।

संजय चितकारा ने कहा कि एलजी बेस्ट शॉप का लक्ष्य आज के बेहतर और संवेदनशील बाजार में खरीदारी के अनुभव को बढ़ाना है और यह नई बेस्ट शॉप एक घर की सभी डिजिटल जीवनशैली की जरूरतों के लिए वन स्टॉप शॉप के रूप में काम करेगी। उपभोक्ता केंद्रित ब्रांड के रूप में एलजी हमेशा ग्राहकों की जरूरतों और भलाई को प्राथमिकता देता है। अपनी मजबूत और बेहतरीन उत्पाद पोर्टफोलियो की पेशकश के अलावा ऐसे स्टोर बनाने का हमारा प्रयास रहा है जो न केवल बाकी सबसे पूरी तरह से अलग हो बल्कि एलजी ब्रांड के मूल्यों को भी प्रदर्शित करे। एलजी बेस्ट शॉप को अंतिम रिटेलिंग अनुभव के रूप में परिकल्पित किया गया है जो नवाचार, गुणवत्ता और उत्कृष्टता की अंतर्राष्ट्रीय छवि के साथ तालमेल बिठाता है। एलजी बेस्ट शॉप कॉन्सेप्ट की स्थापना एलजी की पहचान को साझा करने के लिए एक प्लेटफॉर्म बनाने के उद्देश्य से की गई थी। इसका उद्देश्य न केवल खरीदार को आकर्षित करना बल्कि एलजी उत्पादों की पहचान को पेश करते हुए आउटलेट में इंटरएक्टिविटी का एक तत्व भी पेश करना है। शोरूम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि त्योहारों जैसे पीक सीजन में भी ग्राहक बेस्ट शॉप में आराम से खरीदारी कर सकें।

डॉ. सरीन राजस्थान भूषण से सम्मानित

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के

बाल विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सरीन को राजस्थान भूषण अवॉर्ड के लिए चुना गया। उद्भव विजन फाउंडेशन के फाउंडर सेक्रेटरी चेतन शर्मा ने बताया कि डॉ. सरीन की ओर से दृष्टिहीन बालकों के लिए विगत चार दशकों से दी गई उल्लेखनीय निस्वार्थ सेवाओं के लिए यह पुरस्कार दिया गया है।

एचडीएफसी बैंक की रिटेलियों से साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और भारत के सबसे बड़े बी2बी फार्मा मार्केटप्लेस रिटेलियों ने को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड की एक नई रेंज लॉन्च की है।

एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड पराग राव ने कहा कि ये बी2बी क्रेडिट कार्ड मुख्य रूप से मर्चेंट सेगमेंट में केमिस्ट और फार्मेसी के लिए बनाए गए हैं। ये बी2बी क्रेडिट कार्ड रिटेलियों के एक लाख से भी अधिक मौजूदा ग्राहकों व नए ग्राहकों के लिए उपलब्ध होंगे। पहले चरण में 1.4 लाख से भी अधिक व्यापारियों को कवर किया जाएगा। इस बी2बी क्रेडिट कार्ड रेंज के जरिए दोनों भागीदारों की साख एवं शक्ति का लाभ उठाते हुए ग्राहकों को बेहतर मूल्य और अनुभव प्रदान किया जाएगा। एचडीएफसी बैंक के पास 6 करोड़ से अधिक क्रेडिट डेबिट और प्रीपेड कार्ड्स का आधार है और ये बैंक हर तरह के मार्केट सेगमेंट के अंदर 'पेमेंट इकोसिस्टम' में अग्रणी है।

टाटा मोटर्स ने पेश की नई नेक्सॉन ईवी मैक्स

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में यातायात के साधनों के तेजी से इलेक्ट्रिफिकेशन के लिए प्रतिबद्ध, टाटा मोटर्स ने उदयपुर में पसर्नल मोबिलिटी सेग्मेंट में भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाले इलेक्ट्रिक वाहन का नया मॉडल लॉन्च किया है। चंबल एलएलपी में उपलब्ध नेक्सॉन ईवी मैक्स 17.74 लाख रुपये (एक्स शोरूम-ऑल इंडिया) के शुरुआती आकर्षक दाम पर उपभोक्ताओं के लिए लॉन्च किया है। इस पेशकश के साथ, टाटा मोटर्स ने इलेक्ट्रिक वाहनों के आकर्षण को बढ़ाने के लिए अपनी नेतृत्व की स्थिति को बनाए रखा है। कंपनी ने उन उपभोक्ताओं को नया ऑफर देने के साथ बाजार का विस्तार किया है, जो अलग-अलग शहरों के बीच लंबी यात्रा के लिए किसी वाहन की तलाश कर रहे थे। टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लि. में मार्केटिंग, सेल्स और सर्विस स्ट्रैटेजी के हेड विवेक श्रीवत्स ने कहा कि नई

नेक्सॉन ईवी मैक्स हाई वोल्टेज की आधुनिक जिपट्रॉन टेक्नोलॉजी से लैस है। यह उपभोक्ताओं के लिए दो ट्रिम ऑफर्स में उपलब्ध होगी, जिसमें नेक्सॉन ईवी मैक्स एक्सजेड + और नेक्सॉन ईवी मैक्स एक्सजेड + एलयूएक्स शामिल हैं।

आलोक स्कूल में डॉ. संपदानंद मिश्र की पुस्तकों का कोर्स प्रारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। स्वरोपण संस्था के संस्थापक पुरुषोत्तम एवं प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर तथा भारत विकास परिषद मेवाड़ के अध्यक्ष प्रशांत व्यास ने आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत से भेंट की। भेंट का मुख्य उद्देश्य जानेमाने संस्कृत विद्वान एवं श्री अरविंद फाउंडेशन के निदेशक डॉ. सम्पदानन्द मिश्र की पुस्तकों का कोर्स स्कूल में प्रारंभ करने का था। इन पुस्तकों में प्राथमिक शिक्षा स्तर पर संस्कृति रोपित करने के साथ ही संस्कृत के प्रति आदर व उत्साह उत्पन्न कर बच्चों के समग्र मानसिक, शारीरिक विकास को प्रगति देना है।

डॉ. कृमावत ने बताया कि संस्कृत निश्चित रूप से बच्चों के मस्तिष्क विकास, उनके अचार विचार की शुद्धता एवं शारिरिक क्षमता को बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण उपाय सिद्ध होगी। आलोक संस्थान में इस कोर्स को आरंभ किया जाएगा और भारत विकास परिषद मेवाड़ के 14वें स्थापना दिवस पर यह कोर्स की विधिवत शुभारंभ करने की घोषणा

कर प्रसन्नता हो रही है। डॉ. कुमावत ने प्रशांत व्यास एवं पुरुषोत्तम को धन्यवाद देते हुए डॉ. सम्पानन्द मिश्र के योगदान की सराहना की। इस दौरान आलोक स्कूल, हिरण मगरी सेक्टर 11 के प्रधानाचार्य शशांक टांक, पीआरओ मनमोहन भटनागर, शिक्षा प्रभारी श्रीमती सुनीता सिंह, श्रीमती बानी मजूमदार, संस्कृत विभाग के प्रभारी बिहारीलाल के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

उदयपुर में हुए.....

(पृष्ठ एक का शेष)

तीसरे दिन पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की निर्विरोध स्वीकार्यता की आवाज को एम्प्लीफाई किया गया। तय हुआ कि सभी राज्यों में राजनीतिक मामलों की समिति का गठन किया जाएगा। नेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण संस्थान होगा, संचार ढांचे को नया रूप दिया जाएगा।

चुनाव प्रबंधन के लिए विशेष कमेटी बनेगी। कांग्रेस कश्मीर से कन्याकुमारी तक पदयात्रा निकालेगी, जिसमें पार्टी के सभी नेता भाग लेंगे। राहुल गांधी ने कहा, ''डिप्रेशन में न जाएं, लड़ाई लम्बी है। शॉर्टकट से काम नहीं चलेगा। पसीना बहाना होगा। जनता के बीच जाना ही होगा। मैंने जिंदगी में एक रूपया किसी से नहीं लिया, कोई भ्रष्टाचार नहीं किया। मैंने भारत माता से एक पैसा नहीं लिया है। मैं सच बोलने से नहीं डरता हूं।''

पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के माध्यम से चिंतन शिविर से रोडमेप सामने आया कि पार्टी देश में 'भारत जोड़ो' यात्रा निकालेगी। देश के सभी जिलों में जन-जागरण चलाया जाएगा। मिशन 2024 के तहत कांग्रेस के एक्शन प्लान में 2 अक्टूबर से यात्रा शुरू होगी। युवा यात्रा में शामिल होंगे। सीनियर नेता सहयोग करेंगे। जिला स्तर पर जनजागरण अभियान 15 जून से शुरू हो जाएगा। अगले 90 से 180 दिनों में पूरे देश में ब्लॉक से लेकर जिला, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर के खाली पदों पर नियुक्तियां हो जाएगी। चिंतन शिविर में प्रशांत किशोर के स्लाइड्स व डेटा का भी असर देखने को मिला।

कहा जाता है कि दिल्ली जीतनी है तो यूपी जीतना होगा और राजस्थान की जीत का रास्ता मेवाड़ से ही होकर जाता है। ऐसे में चिंतन शिविर का महत्व और अधिक बढ़ गया। चिंतन शिविर से विदाई की तस्वीरों के साथ ही इस बात पर मंथन शुरू हुआ कि कांग्रेस ने यहां आकर क्या खोया, क्या पाया। नेतागिरी के मंझे हुए लोग पूछने लगे कि संकल्पों के जो कागजी सिलसिले उदयपुर में शुरू हुए हैं क्या वो हकीकत के धरातल पर उसी ऊर्जा के साथ दिखेंगे या फिर फिर कहीं धुंध में ही खो जाएंगे।

संगठन में बदलाव पर फैसले लिए गए मगर एकबार फिर अध्यक्ष पद लेकर मौन साध लिया गया। छह विषयों पर समिति ने चर्चा की व कहा कि ध्रुवीकरण की काट तलाशे बिना चुनाव जीतना मुश्किल है। सॉफ्ट हिंदुत्व, सर्वधर्म समभाव को लेकर चलेंगे, इस पर भी ऊहापोह रहा।

जनता के साथ संवाद टूटा है यह बात सबको पता है मगर संवाद कैसे बनेगा? धुंआधार प्रचार युद्ध के बीच कांग्रेस का ब्रांड आखिर कैसे हाथों-हाथ लिया जाएगा? कांग्रेस देशव्यापी पदयात्राएं कौनसा कमाल दिखा देंगी? सबसे बड़ी बात भारत जोड़ो का नया नारा क्या अगस्त क्रांति की तरह मारक होगा। पचास वर्ष की उम्र के नेताओं को आगे लाने का कदम कितना सही साबित होगा व लोकतांत्रित संतुलन को कितना साध लिया जाएगा जबकि अभी परिवार की कोटरी की भक्ति में लीन लोगों भी कह रहे हैं कि वक्त हाथ से निकल रहा है।

लोग कह रहे हैं कि पार्टी 'देश को बचाना है' की बात कह रही है जबकि हकीकत यह है कि उसे अपना किला बचाना है। चुनाव जीतने की मशीन के सामने वे कौनसे नए नेता होंगे जो मशीनगन का रोल अदा कर सकेंगे। इन सब सवालों का जवाब कांग्रेस को देना ही होगा। देश के लोकतंत्र की यही खूबसूरती है कि यहां पर प्रतिपल संवादों की गुंजाइश है और देश का भला भी इसी में है कि मजबूत सरकार के साथ उसे आईना दिखाने वाला मजबूत विपक्ष भी हो। कांग्रेस अपने फिलहाल की जर्जर होती हालत से कैसे अचानक उठ खड़ी होगी और नई चुनौती पेश कर राजनीति को नई दिशा देगी, यह आने वाला वक्त ही बताएगा।

स्किल गेम्स काउंसिल ने समान केंद्रीय दिशानिर्देश लागू करने पर जोर दिया

उदयपुर (ह. सं.)। राज्य सरकार ने हाल में सार्वजनिक विमर्श के लिए 'राजस्थान वर्चुअल स्पोर्ट्स (विनियमन) विधेयक' ड्राफ्ट जारी किया। बिल में सभी गेमिंग सेवा प्रदाताओं को राज्य में कारोबार करने के लिए लाइसेंस लेने की बात कही गई। राज्य सरकार ऑनलाइन स्किल-आधारित गेम्स खासकर फंतासी गेम्स के लिए विनियमन कानून लागू करने की योजना बना रही है। इसी सिलसिले में स्किल गेम्स काउंसिल ऑफ इंडिया ने यह सुझाव दिया है कि सरकार सभी ऑनलाइन स्किल गेम्स के लिए बराबर नियम शामिल कर ड्राफ्ट को अधिक समावेशी बनाए और यह केवल फंतासी गेम्स के लिए विनियमन नहीं लाए। स्किल गेम्स काउंसिल ऑफ इंडिया गणमान्य लोगों का एक निष्पक्ष उद्योग निकाय है जो स्किल गेम्स की योग्यता निर्धारित करता है।

स्किल गेम्स काउंसिल के प्रमुख सदस्य पूर्व न्यायाधीश विक्रमजीत सेन ने कहा कि पिछले कुछ समय से स्किल-आधारित ऑनलाइन गेमिंग की वैधता को अदालती निर्णयों ने बरकरार रखा है और अब इस पर एक व्यापक राष्ट्रीय नीति अत्यावश्यक है। राज्य सरकार का प्रस्तावित मसौदा ध्यान देने योग्य है क्योंकि केवल फैंटेसी गेमिंग को इस दायरे में शामिल करना अनुचित होगा। हालांकि मैं इस विचार से सहमत हूं कि खिलाड़ियों और डेवलपर्स के अधिकारों की रक्षा आवश्यक है जबकि ऑनलाइन गेमिंग समुदाय के कानूनों और विनियमों पर मंथन में अक्सर उनकी अनदेखी हो जाती है।

स्किल गेम्स काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य डॉ. सुतनु बेहुरिया ने बताया कि ऑनलाइन गेमिंग एक सनराइज सेक्टर है और यह रोजगार, युवाओं के लिए तकनीकी कौशल और फिर सरकार के लिए राजस्व बढ़ाने की संभावना से परिपूर्ण है। इस संदर्भ में प्रगतिशील नीतियां बनाने और नियामक ढांचे में सक्षमता का परिवेश बनाना महत्वपूर्ण है।

एसजीसी के एक सदस्य पी.के. मिश्रा ने कहा कि एसजीसीआई ने हमेशा जिम्मेदारी के साथ गेमिंग, यूजर की इंटीग्रिटी, खिलाड़ी की सुरक्षा और सदस्य ऑपरेटरों के लिए सर्वोत्तम प्रक्रियाओं की आवश्यकता को सामने रखा है ताकि उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए नैतिकता सुनिश्चित हो। इसलिए बिल का मसौदा तैयार करते समय गेमिंग समुदाय की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए इसमें लगातार सुधार और समरूप बनाना आवश्यक है।

जिंक फुटबॉल स्कूलों में ग्रासरूट प्रशिक्षण फिर से शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता हिंदुस्तान जिंक की सीएसआर पहल, जिंक फुटबॉल ने जावर में अपने सामुदायिक फुटबॉल प्रशिक्षण केंद्रों, जिन्हें जिंक

फुटबॉल स्कूल के नाम से जाना जाता है, के पुन: संचालन की घोषणा की है। हर बच्चे को खेलने का अवसर मिलना चाहिए, इस सोच के साथ जिंक फुटबॉल ने हिंदुस्तान जिंक के पांच परिचालन स्थानों में जिंक फुटबॉल स्कूल स्थापित किए थे, जहां बच्चों को प्रशिक्षित और प्रमाणित कोचों द्वारा साप्ताहिक आधार पर फुटबॉल प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था। अभूतपूर्व कोरोनो वायरस प्रकोप के कारण इसे अस्थायी रूप से बंद करने से पहले यह सामुदायिक कार्यक्रम एक बड़ी सफलता थी।

सभी सुरक्षा पहलुओं को ध्यान में रखते हुए और बच्चों को पिच पर वापस लाने के लिए, जिंक फुटबॉल स्कूलों ने दो केंद्रों सिंघटवाड़ा और टीडी में फिर से शुरू कर दिया है,जहां 14 और 17 साल से कम उम्र के 100 से अधिक लडक़े और लड़कियां खेलेंगे और हर हफ्ते तीन प्रशिक्षण सत्रों में भाग लें। इसके बाद, राजस्थान में हिंदुस्तान जिंक के परिचालन क्षेत्रों के आसपास के सभी स्थानों पर केंद्रों को फिर से खोलने की योजना है।

जिंक फुटबॉल अकादमी के मुख्य कोच तरुण रॉय ने कहा कि मैं युवा लडक़ों और लड़कियों को वापस मैदान पर फुटबॉल खेलते हुए देखकर बहुत उत्साहित हूं। जिंक फुटबॉल स्कूल स्थानीय समुदायों के इन महत्वाकांक्षी बच्चों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेंगे और हम, कोच के रूप में, न केवल उनकी फुटबॉल विशेषताओं को विकसित करने के लिए,बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए सर्वोत्तम संभव तरीके से उनका सामाजिक उत्थान की भी कोशिश करेंगे। जिंक फुटबॉल युवा लडक़ों और लड़कियों को फुटबॉल के माध्यम से खुद को व्यक्त करने का एक मंच है। विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ जावर में जिंक फुटबॉल के पास एक पूर्ण आवासीय अकादमी है और देश का पहला 'प्रौद्योगिकी फुटबॉल प्रशिक्षण'- एफ-क्यूब तकनीक है।

पत्रकारिता की.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इसके चारों ओर छोटे-छोटे सुराख बने हुए हैं जिनके माध्यम से बच्चे भीतर सिनेमाई दृश्य देखकर आनंदित होते हैं। ठेला चालक टीन के बने एक भोंपू से दूर-दूर तक अपनी आवाज पहुंचाता हुआ बच्चों को आकर्षित किये रहता है।

यह एक प्रकार का ठेला बाइस्कोप ही है। ठेला चालक चकरी को घुमाता हुआ एक के बाद एक आने वाले दृश्यों को आकर्षक ढंग से बताता चलता है। बच्चे आंखें फाड़-फाड़कर सुराख-गवाक्ष से झांक भीतर चलती हुई रील देख फूले नहीं समाते हैं। इसमें जो विविध दृश्य दिखाये जाते हैं वे बड़े रोचक, आकर्षक और अजूबे होते हैं। चालक बड़े लयकारी ढंग से विशिष्ट गायकी में दृश्यमान होते चित्रों से रू-ब-रू करता है।

मुमताज महल का रोजा देखो / तेरह मन की टांग देखो /
गोपियों का चीर हरण देखो / लाल किले के बंदर देखो।

अकाल के दिनों में सबसे बड़ा संकट ही पानी का होता है। पानी नहीं तो कुछ नहीं है। नवरात्रा में लोक देवी-देवता को मनाने लोग इकट्ठे होते हैं। उन्हें लगता है कि माताजी भी रूठी हुई है। एक समाचार 7 अप्रेल 1987 को इस प्रकार छपा-

माताजी रूठी तो पाणी ना मिले

उदयपुर (ह.स.)। धरती से धर्म-पुण्य उठता जा रहा है, तब माताजी भी रूठेंगी और आदमी आदमी से बैर करेगा। यह जमाना ही मनखमारों का हो गया है। यह बात आसपुर तहसील के प्रसिद्ध तीर्थस्थल विजवा माता के वहां सुनने को मिली। यहां इन दिनों नवरात्रा की वजह से बड़ी तादात में भक्त लोग दर्शनार्थ आ रहे हैं।

दर्शनार्थी लोगों को यहां सबसे बड़ा संकट पानी का है। यह पानी इतना दुर्लभ हो गया है कि एक-एक गिलास के लिए पच्चीस पैसा लिया जा रहा है। मंदिर के आसपास चार हैंडपंप हैं, पर चारों ही सूखे पड़े हैं। लोगों का विश्वास है कि इस कलयुग में धर्म की जड़ें खत्म हो गई हैं इसलिए माताजी भी रूठी हुई हैं। स्त्रियां गीत गा-गा कर माताजी को मनाने का प्रयत्न कर रही हैं। उनके गीतों के बोल हैं-

माता कलयुग में धर्म-करम उजड़ियो।
माता काल गंवायो सगलो सोभणो।
माता धरती री कोखां पाणी सूखियो।
माता थाने मनावां धोकां सै मिलां।
माता म्हांणी गलती नै छोड़ो थें बड़ा।
थांणी जाजम पै कर दो किल्याण।
माता हेंडपंप रूठ्यो तो भले रूठे।
माता थें जो रूठो तो दनियां रूठसी।

अकाल के बाद वर्षा अच्छी हुई पर किसान सुविधाहीन ही बना रहा। अकाल में पशुधन की इतनी बर्बादी हुई कि दुधारू जानवर के साथ-साथ बैल भी नहीं बचे फलस्वरूप स्त्री और बच्चे ही बैलों की जगह जुत गए और खेती का कामकाज प्रारंभ कर दिया। कोटड़ा तहसील में काश्तकारों ने खुशियों के मारे बुवाई का कार्य प्रारंभ कर दिया। एकबार उदयपुर में मच्छरों का बड़ा आतंक रहा जो यदाकदा अब भी देखने को मिलता है। तब मैंने इस संबंधी एक मनोरंजक रपट-समाचार भेजा जो 2 मार्च 1991 को छपा।

मच्छरों का शहर है मेरा शहर यारों

उदयपुर (ह. सं.)। झीलों का शहर उदयपुर हर समय किसी-न-किसी समस्या से ग्रस्त रहा है। पानी का अकाल कभी बड़ी भयंकर समस्या रही तो जलकुंभी की समस्या भी बड़ी विकट होकर पसरी। औद्योगिक इकाइयां निरंतर प्रदूषण देकर यहां की सौंदर्यश्री पर कालिख पोत रही हैं। जनमानस की स्वायत्तता को लील रही हैं। शहर की बस्तियों में चौड़ेधाड़े ईंट के अवैध भट्टे अपना साम्राज्य फैलाए देखे जा सकते हैं। लगभग डेढ़ सौ से ऊपर ये भट्टे अपना धुआं देकर पूरे शहर को दमघोटू बनाए रहते हैं।

एक सर्वेक्षण के अनुसार पीछोला के पास की एकलव्य कालोनी में ही 11 भट्टे हैं। कुछ फतहसागर के समीप संजय पार्क के पास हैं। शहर के अंदर कुम्हारवाड़ा में 50 से अधिक लोग भट्टे चला रहे हैं। खेमपुरा में भी एक दर्जन से अधिक भट्टे चल रहे हैं। ऐसे ही मादड़ी, भोईवाड़ा, भोपामगरी और आयड़ नदी के किनारे बेरोक भट्टे धुआं दे रहे हैं पर इन दिनों एक समस्या और उठ खड़ी हुई है, वह मच्छरों की है। सड़क पर कहीं निकाल जाइये, मच्छरों से जब तक परेशान नहीं होंगे, रास्ता नहीं मिलेगा। एक कवि ने ठीक ही लिखा है-

'वह समय था अतर से घोड़े नहाते थे जहां,
यह समय है गंदगी से तर शहर मेरा यहां।
बस्तियों में ईंट भट्टों का धुआं देता अंधेरा,
इन दिनों तो मच्छरों का शहर मेरा शहर यारों।'

- क्रमश :

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (12)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

8 अक्टूबर 1968 को हम सवाईभोज पहुंचे। यह स्थान भीलवाड़ा से 32 मील दूर ब्यावर जाने वाली सड़क पर आसींद के पास स्थित है। आसींद और इसके बीच केवल खारी नदी की पट्टी है। सवाईभोज के मन्दिर के कारण यह स्थान भी सवाईभोज

सवाईभोज मन्दिर

के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर में सवाईभोज के रूप में अनघड़ पत्थर की पूजा होती है। इसके पीछे दीवाल में सवाई की बूंली घोड़ी, दांई ओर देवनारायण तथा बांई ओर पातू कलालण की पत्थर की प्रतिमा पूजान्तर्गत है।

भोज की सुबह 8 बजे, शाम को 7 बजे तथा रात को 3 बजे पूजा होती है। शनिवार को यह पूजा चार बार सायं 4 बजे भी होती है । प्रतिदिन प्रात: 3 बजे तथा सायं 7 बजे इनके शराब चढ़ाई जाती है। देवरे के अन्तर्गत 675 बीघा जमीन तथा 12 कोस का गरदाव है । भादवी छठ तथा माही सातम को यहां जागरण होता है।

सवाईभोज भक्त थे। उनके लड़के देवनारायण अवतार माने जाते हैं। बाघराव के चौबीस पुत्रों में सवाईभोज बारह से छोटे तथा ग्यारह से बड़े पुत्र थे। बाघराव की बारह रानियों से प्रति रानी दो-दो पुत्र उत्पन्न हुए। लोकजीवन में बाघ के ये चौबीस ही पुत्र लोक देवताओं के रूप में स्वीकारे गये हैं। आज भी उनके नाम से जो-जो गांव स्थापित हुए उनमें इनकी प्रतिमाओं की पूजा की जाती हैं। चौबीस ही भाई तथा उनके द्वारा स्थापित गांवों की नामावली इस प्रकार है-

(1) तेजाजी का पाटण (2) बहाराव का बागोर (3) बनाराव का बदनोर (4) ऊंटाराव का ऊंटाली (5) खेताराव का खेजड़ी (6) आसाराव का आसींद (7) पराराव का परावली (8) हादाराव का हावदड़ा (9) काराराव का कारोई (10) सांगाराव का सांगानेर (11) कोडाराव का कुवाड़ो (12) मांडाराव का मांडल (13) सवाई भोज का दड़ावट (14) नीया राव का नेगड़िया (15) माखाराव का माकड़िया (16) नींबाराव का नीबेड़ा (17) झाला राव का झाल्या (18) काणाराव का काण्या (19) रद्दाराव का रदरपुरा (20) गागाराव का गागेड़ा (21) गाडाराव का गाडरमाला (22) कीड़ाराव का कीड़ीमाल (23) चनाराव का चैनपुरा तथा (24) पांदाराव का पांदल गांव सुप्रसिद्ध है।

इसी प्रकार बहाराव के लड़के भूणाजी का भूणास, बगड़ावतों की दासी जीवली का जीवल्या तथा कावली का कावल्या, नीयाराव के लड़के जग्गा का जीवा नामक गांव उनकी स्मृति को आज भी ताजा बनाये हुए हैं। ये सभी गांव भीलवाड़ा जिलान्तर्गत हैं। इनसे सम्बन्धित वीराख्यान भी उधर लोकमुख से सुनने को मिलते हैं। सवाईभोज की माता लकमादे राठौड़ वंश की थी। उनके नाम का राठौड़ा तालाब यहां का प्रसिद्ध है जिसमें नहाने से कोढ़, गर्मी तथा खाज मिट जाती है। सवाईभोज का यह स्थान गोठ, पाल्यो, उदेराय तथा खांडेराय के नाम से भी प्रसिद्ध है।

सवाईभोज के पाट भोपों की अभी 24वीं पीढ़ी चल रही है। पाट पुजारी के रूप में इस समय रूपनाथजी महाराज आसीन हैं। इनके पहले क्रमश: देवादास, खूमदास, भेरदास, नंगादास, जगदास, रूपदास, सेवादास, लालादास, दूधाधारी, रतनदास नामक पुजारी हो चुके हैं। ये पुजारी भोपा, गोदड़, साधु, देव का पुजारी आदि नामों से सम्बोधित किये जाते हैं। सवाईभोज में आने वाले प्रत्येक दर्शनार्थी के लिए मुफ्त मक्की की घाट तथा छाछ की व्यवस्था है। कोई भी यहां से निराश नहीं लौटता है। प्रतिदिन सुबह तथा सायंकाल यहां का भंडारी रेड़ के रूप में भूखे प्यासे को भोजन के लिए आमंत्रित करता है।

सवाईभोज का यह स्थान बड़ा ही सुखद एवं आरोग्यकारी है। पुजारी रूपनाथजी से हमें इस विषयक और भी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हुई। देर रात तक वार्ता विमर्श में हम इतने लीन हो गये कि वह रात हमें वहीं व्यतीत करनी पड़ी। प्रात: वहां से हमलोग सीधे शाहपुरा गये।

बीच में लगभग आधे घण्टे हम माण्डल ठहरे। यहां प्रो. मथुराप्रसाद अग्रवाल 'पतंग' से भेंट की। श्री अग्रवाल पहले डूंगरपुर में थे इसलिए डूंगरपुर क्षेत्र की लोककला विषयक इनसे जानकारी प्राप्त करना आवश्यक था ताकि उस क्षेत्र में जाने पर हमें इस सम्बन्ध में वहां अधिक जानकारी प्राप्त हो सके।

शाहपुरा पड़ चित्रकारी का मूल स्थान रहा है। सबसे पहले पड़ बनने का काम यहीं से प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में पड़ बनाने

गींदड़ नृत्य करते कलाकार

वालों का यहां एक ही घर है। श्री दुर्गेश जोशी इसके मुख्य चितेरा हैं। इनके पिता घीसूलालजी ने इस चित्रकारी में बड़ा नाम कमाया। श्री दुर्गेश ने फड़ के साथ-साथ पड़ शैली में कई छोटे-छोटे विविध आकार प्रकार के पट-चित्र भी प्रारम्भ किये जिनमें उनकी कलम को कमाल हांसिल हुआ।

शाहपुरा से सीधे भीलवाड़ा आकर रात्रि को फुलेरा के लिए प्रस्थान किया। फुलेरा क्षेत्र लीलाओं का बड़ा प्रसिद्ध स्थल रहा है। इस क्षेत्र के आकोदा में रूपनारायणजी, गोपी तथा जीवनजी, हरणोदा में बड़ीवाल मूलजी तथा साँवलजी, रोझड़ी में हणुमान, घीसालाल, भूरजी, गोपीजी, गणपत तथा सांवलजी, ग्रासलपुर में बालजी, मोरजी, ढींढा में पनजी कडेरिया, बोराच में महादेवजी, सूरजशंकर, सरलालजी, उगरास में मोतीजी, भूरजी, नवलजी की अच्छी मण्डलियां थीं।

अब सभी लोग प्राय: रासधारी छोड़ नत्थाराम के हाथरसी ख्याल करने लग गये हैं। इनमें रोझड़ी में सांवलजी की अभी भी रासधारी की सशक्त पार्टी है। इसलिए यहां से हम सांवलजी से भेंट करने रोझड़ी पहुंचे। फुलेरा से यह स्थान लगभग 5 मील हरणोदा स्टेशन के पास पड़ता है। यहां आने पर पता लगा कि सांवलजी का दल जयपुर के आसपास कहीं प्रदर्शनरत है। हम निराश नहीं हुए। गांव में थोड़ा भटकना अवश्य पड़ा परन्तु पूछताछ कर हमने कुछ ऐसे व्यक्तियों का पता लगाया जो पहले रासधारी में वर्षों तक रह चुके थे। इनमें 79 वर्षीय गणपतजी तथा 55 वर्षीय घीसूजी से हमारी भेंट हुई ।

बात के दौरान उन्होंने कहा कि यहां गत 100 वर्षों से रासधारी का ख्याल होता रहा है। इस गांव में रामचन्द्रजी, कल्याणजी, रूघजी, कनीरामजी, घासीरामजी, रामनारायणजी, मांगीलालजी, गणपतजी, चुन्नीलालजी आदि की बड़ी प्रसिद्ध मण्डलियां थीं।

रासधारी में विविध लीलाएँ की जाती थीं। इन लीलाओं में माखन लीला, चोर लीला, चंद्रावल लीला, गोरधन लीला, गेंद लीला, पनघट लीला, रासलीला, बंशी लीला, मान लीला, हरिश्चन्द्र लीला, प्रहलाद लीला, वनविहार लीला, ब्रजविलास लीला, बेणी-गूंथन लीला, पारसी लीला आदि मुख्य थीं। ये लीलाएं छोटी-छोटी छपी हुई पुस्तकों के आधार पर प्रदर्शित की जाती थीं जो मथुरा से प्रकाशित एवं ब्रम्हानंद, गोकलदास, रामानन्द आदि की लिखी हुई होती थीं।

एक समय था जब आकोदा, भोराच, उगरास, हरणोदा, रोझड़ी आदि क्षेत्रों में इन लीलाओं की लगभग 100 छोटी मोटी मण्डलियां थीं। इन मण्डलियों का संचालन कुमावतों के हाथों में था। रूघजी का दल बरमा, कलकत्ता, रंगून तक भी गया। मथुरा के लोग भी इधर लीलाओं के दल लाते थे। जटा, मुकुट, दाढ़ी, मूंछें, चेहरे सब मथुरा से मंगवाये जाते थे।

10 अक्टूबर को यहां से हम रामगढ़ पहुंचे। यहां श्री गींडाराम वर्मा का हमें बड़ा महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। वर्माजी पहले भारतीय लोककला मण्डल में रह चुके थे। उस समय वहां से प्रकाशित राजस्थान का लोकसंगीत, राजस्थान के लोकनृत्य, राजस्थान के लोकनाट्य, राजस्थान के लोकानुरंजन, राजस्थान के लोकोत्सव आदि पुस्तकें प्रकाशित करने में इनका महत्त्वपूर्ण श्रम, लेखन और सहयोग रहा।

इनके सहयोग से हमने गींदड़ तथा ख्याल के सुप्रसिद्ध कलाकार मोहनजी पुरोहित, राधेश्यामजी उस्तागार तथा लीलाधर नाई, कच्छीघोड़ी के प्रसिद्ध नचैया सुमान तथा चिड़ावी ख्याल के जाने माने कलाकार उमरदीन इलाही से भेंट की। संगीतप्रेमी नारायणजी कलावटिया का भी हमें इस काम में बड़ा सहयोग मिला।

गींदड़ की परम्परा यहां लगभग 60 वर्ष से है। सबसे पहले सीकर से यह गींदड़ यहां दर्जी लाये और फतहपुरिया दरवाजे में प्रारम्भ की। लहरीप्रसाद पुरोहित इस गींदड़ के नामी कलाकार थे।

धीरे-धीरे यह गींदड़ बीकानेरी तथा बिसाऊ दरवाजे में भी प्रारम्भ हुई। यह गींदड़ तख्तों पर बांस के बने विशेष प्रकार के आकर्षक मंडप के चारों ओर घाली जाती। होली के दिनों में 'घलै गींदड़ लगै डंका' की नगाड़ा गत, पांवों की थिरकन, डंकों की चोट तथा लूर के स्वरों के समान सम्मिश्रण के साथ गींदड़ की यह बहार देखते ही बनती है। रामकुमार, रामप्रसाद, मुरलीधर, नागरमल पुरोहित, भूमित्र जड़िया तथा भूरजी गींदड़ के अच्छे कलाकार थे। वर्तमान में राधेश्याम उस्तागार, भानाराम नाई, नवलीराम नाई, रतीराम माली, लालचन्द दाधीच, भूरामल माली, गिरधारी नाई, बनवारीलाल नरेड़ा आदि विशिष्ट कलाकार हैं।

लगभग 50 वर्ष पूर्व जयदेव पुरोहित ने यहां नौटंकी प्रारम्भ की। उनकी मण्डली में गीगराज दर्जी, लक्खूराम पुरोहित, बालजी सोनी, महादेवजी मिश्र, महावीर मिश्र, महावीर व्यास आदि प्रसिद्ध कलाकार थे। चिड़ावे की मण्डली के देखादेख वल्लभजी गंगावत ने चिड़ावी स्थालों का प्रदर्शन प्रारम्भ किया।

रतना डाकोत, भीमजी तिवारी आदि उनके सहायक कलाकार थे। इन ख्यालों के पूर्व यहां शायरा मुसायरा ढपली पर किल्ले तुरंगी (तुरकिलंगी) का ख्याल प्रचलित था। वल्लभजी के बाद सल्ला नाई ने इसमें खूब प्रसिद्धि पाई। यहां धनजी सोनी, गिरधारीलाल चौमाल आदि अच्छे ख्याल लेखक हुए। धनजी महात्मा कालूराम के चेले थे। गुरु गिरधारीलाल ने देशी भाषा में कृष्ण सुदामा ख्याल लिखा।

- क्रमश

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।